यह कैसी विदाई...

डॉ. डी. यू. पाठक

(जनरल सर्जन)

इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस

प्रकाशक :

इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
ई-5/21, अरेरा कालोनी, हबीबगंज थाना रोड,
भोपाल म.प्र. - 462016
फोन +91 755 2465238, 4277445

प्रथम संस्करण अगस्त, 2006
(प्रथम संस्करण मात्र 48 घंटों में समाप्त)
द्वितीय संस्करण सितंबर, 2006
तृतीय संस्करण दिसम्बर, 2006
© लेखकाधीन 2006 डॉ. डी.यू.पाठक
ISBN : 81-89107-097
मूल्य : रु. 60/- मात्र
मुद्रक : मल्टी गाफिक्स ऑफसेट, भोपाल
वितरक: मंजुल पब्लिशिंग हाउस प्रायवेट लिमिटेड, भोपाल
प्रचारक: फुल सर्कल पब्लिशिंग प्रायवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior written permission of the author. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

समर्पण

दुनिया भर की
बेटियों के नाम .....

यह पुस्तक नहीं, एक संदेश है इसे अधिक से अधिक
लोगों तक पहुँचाकर भ्रूण हत्या रोकने में हमारी मदद करें।

प्रकाशक की कलम से...

लोगों ने इस पुस्तक को हाथों-हाथ उठाया ।

विमोचन के तीसरे दिन ही द्वितीय संस्करण की तैयारी शुरू करनी पड़ी । इससे यह महसूस हुआ कि लोगों का जमीर अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। समस्या सुलझने की आशा की जा सकती है।

अनगिनत प्रतिक्रियाओं को इस पुस्तक में सम्मिलित करना संभव नहीं है अत: उन प्रतिक्रियाओं की एक दूसरी पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित होगी।

आपके पत्र का हम स्वागत् करेंगे।

आपका अपना
मनीष गुप्ता
(इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस)

कोख मिली पर गोद न मिली

एक पेड़ पर क्रौंच पक्षियों का जोड़ा बैठा था। एक शिकारी ने उसे देखा। उसने तीर चला दिया तो एक क्रौंच मरकर गिर पड़ा। महर्षि वाल्मीकि ने इसे देखा। देखते ही उनके हृदय की अतल गहराई से अनायास एक श्लोक फूट पड़ा। वेदना की इसी वाणी से रामायण महाकाव्य की रचना हुई। आज वाल्मीकि होते तो भ्रूण-वध देखकर पता नहीं किस महाकाव्य की रचना करते। वाल्मीकि तो हैं नहीं, उनका काम कौन करेगा ?

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की एक कविता है - अस्ता चलगामी सूर्य ने पूछा कि मैं अब तो जा रहा हूँ, मेरा काम कौन करेगा ? चारों ओर मौन छा गया। जब कोई कुछ नहीं बोला तो मिट्टी का छोटा-सा दीया बोला, प्रभु, यथाशक्ति आपका काम मैं करूँगा।

वाल्मीकि का काम डॉ. पाठक कर रहे हैं। अजन्मी कन्याओं की हत्या देखकर वे इतने द्रवित हुए कि उनसे रहा न गया और उनकी कलम से यह खंड-काव्य अनायास फूट पड़ा।

सहारा का मरुस्थल इतना गर्म है कि वहाँ वर्षा नहीं होती। बादल से अगर वर्षा होती भी है, तो वह जमीन तक पहुँच नहीं पाती, बीच रास्ते में ही भाप बनकर उड़ जाती है। इन दिनों लड़कियाँ अवतरित होने के पहले ही भाप बनकर उड़ जाती हैं। अगर वे बेटी न होकर बेटा होतीं, तो क्या उनका वध किया जाता ?

ये ही वे प्रश्न हैं जिन्होंने डॉ. पाठक को आलोड़ित किया है और उनकी लेखनी से यह काव्य प्रवाहित हुआ है। दो अजन्मा जुड़वाँ बहनों के बीच के वार्तालाप की उनकी कल्पना ही इतनी मनोरम और मार्मिक है कि हमारी आँखें भर आती हैं। दोनों बहनों को आहट हो जाती है कि लड़की के रूप में जन्म लेकर उन्होंने भयंकर अपराध किया है और उन्हीं के माता-पिता की अदालत ने उन्हें मौत की सजा सुनाई है। उनका अंत समीप है। तब उन पर क्या बीतती है, बड़ी बहन किस तरह छोटी बहन को धीरज बँधाती है, आलिंगनबद्ध कर लेती है, इसी का मर्मात्मक चित्रण है इसमें।

अजन्मी लड़की मुजरिम है। सजा है देहांत-दंड। हमारे शास्त्रों में कितने प्रकार से नारी की वन्दना की गई है। जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का निवास होता है। और जहाँ नारियों की भ्रूण-हत्या होती है, दहेज के लिए जिन्दा जला दी जाती हैं, बलात्कार के बाद छुरों से गोद दी जाती है, वहाँ किसका निवास होता है ? आज हम किस समाज में जी रहे हैं ? लगता है, शास्त्रों का सीखा-पढ़ा सब अकारथ हो गया।

भ्रूण-हत्या को तत्काल रोकना होगा। अगर भ्रूण-हत्या को न रोका गया, तो कुछ ही वर्षों में उसे वैसी ही स्वीकृति मिल जाएगी, जैसी रिश्वत को मिल गई है। हम उसके अभ्यस्त हो जाएंगे। यह बहुत बुरा होगा। समस्त समाज-व्यवस्था ही चरमरा जाएगी। सफेद नकाबपोश हत्यारे माताओं की कोख में घुसकर लड़कियों की हत्याएँ कर रहे हैं। लेकिन उन्हें क्या दोष दें, स्वयं माँ-बाप इस काम के लिए उन्हें सुपारी दे रहे हैं।

डॉ. पाठक ने दो जुड़वाँ बहनों की कहानी के माध्यम से लाखों अजन्मी लड़कियों की कहानी कह दी है। कहानी उन्होंने इतने प्रभावशाली ढंग से कही है कि इसके पढ़ने के बाद शायद ही कोई पिता बेटी के भ्रूण-हत्या करवाए और शायद ही कोई डॉक्टर इस घृणित काम को करे। अगर इस पुस्तक का

व्यापक प्रचार-प्रसार होता है तो वह समाज के हित में होगा।

प्रस्तावना समाप्त हो गई। लेकिन जिस प्रकार पुस्तक के अंत में परिशिष्ट होता है, उसी प्रकार इस प्रस्तावना के अंत में यह परिशिष्ट है। पुस्तक में बेटी अपने पिता से जो प्रश्न पूछती है, वे उतने ही मार्मिक हैं जितने मार्मिक द्रौपदी द्वारा पितामह भीष्म को पूछे गए प्रश्न थे। संदर्भ बदल गया है, तरीका बदल गया है, पर बात वही है। शायद ज्यादा बुरी, क्योंकि उसमें नारी-उत्पीड़न की बात थी, यह नारी-उन्मूलन की बात है। इन संवादों ने मुझे इतना झकझोर दिया कि मुझसे न रहा गया और संवाद की उस शृंखला में कुछ कड़ियाँ मैंने भी जोड़नी चाहीं :

पापा! हमें यह तो मालूम था कि किलकारियों से हमारा स्वागत नहीं होगा, लेकिन इसका तनिक भी अंदाज न था कि बीच रास्ते में ही हमारा गला घोंट दिया जाएगा। अभी तो हमने आपकी गली में प्रवेश ही किया था, घर-आँगन तो अभी दूर था, तभी, हमें दूर से ही देखकर आपने हमें भेड़ियों के आगे डाल दिया ? अभी तो हम आपके देश में आए ही नहीं थे और देश निकाला दे दिया ? किस जुर्म की सजा है यह ?

आज कई दम्पती बच्चों को गोद लेने के लिए तरस रहे हैं। उनकी पहली पसंद लड़का नहीं, लड़की होती है। आप ऐसे ही किसी परिवार को हमारा 'कन्यादान' कर देते तो वे तुम्हारे कितने कृतज्ञ होते। 'कन्यादान' की जगह तुमने तो 'पिंडदान' ही कर दिया, पापा! इस लोक को देखे बगैर ही हम परलोक सिधार गए!

पापा! हम केवल आपकी बेटी नहीं हैं। दादा-दादी और नाना-नानी की नातिने भी हैं। किसी की बहने हैं, किसी की भतीजी तो किसी की भानजी। किसी के घर की लक्ष्मी भी हैं। आप अकेले ने ही हमें मारने का निर्णय कैसे ले लिया, पापा! आपके इस कार्य में क्या वे लोग भी सहमत हैं ? मामा कंस क्रूरता का पर्याय बन चुका है क्योंकि उसने अपनी बहन देवकी के सात बच्चों को मार डाला था। आज यही काम देवकी और वासुदेव स्वयं कर रहे हैं! खुद होकर कह रहे हैं, आओ, मेरी बेटियों को मारो! मारने के पैसे दूँगा!

किन्तु पापा! दोषी केवल आप नहीं हैं, पूरा समाज दोषी है, जहाँ लड़कियाँ रद्दी के भाव बिकती हैं। हम परिस्थितियों की शिकार हैं। बलि बकरे की दी जाती है, बकरी की नहीं। काश हम मनुष्य न होकर बकरी होतीं!

छोटी, अगर तू लड़का होती न, तब भी हम दोनों बच जाते। लड़के को वे नहीं मारते। लड़के के पीछे लड़की भी बच जाती है।

क्या लड़का इतना जरूरी है और लड़की इतनी गैर-जरूरी ? लेकिन बस, अब कोई प्रश्न नहीं। हम जा रही हैं, अपनी चीखों से आपको परेशान किए बिना शान्ति के साथ जा रही हैं क्योंकि हमें पता है कि आपने पहले से ही हमारे लिए कब्र खोदकर तैयार कर रखी है। आपका इतना एहसान हम कभी न भूलेंगे। अलविदा, पापा!

इस पुस्तक को पढ़कर, इसकी प्रस्तावना लिखकर मुझे बेहद खुशी हुई। जितनी खुशी हुई, उतने ही आँसू भी बहाए। इन दिवंगत अजन्मी लड़कियों का तर्पण आँसुओं से ही किया जा सकता है।

अमृतलाल वेगड़

अनुक्रमणिका

1.	प्रस्तावना	13–19
2.	अस्तित्व	20–26
3.	पुत्र सहारा	27–30
4.	प्रेरणा	31–32
5.	सुहागन	33–34
6.	जानवर की लड़की	35–36
7.	क्या है... ?	37–46
8.	मोल भाव	47–50
9.	फैसला	51–53
10.	विसंगति	54–56
11.	दहेज	57–59
12.	स्त्री विहीनता	60–64
13.	खुद की पहचान	65
14.	आश्चर्य	66–67
15.	कब लड़का ? कब लड़की ?	68–70
16.	विवाह संस्कार	71–76
17.	स्त्री का पद	77–78
18.	विरक्ति	79–80
19.	वंश दीपक	81–83
20.	मुखाग्नि	84
21.	वैराग्य	85
22.	सामाजिक दबाव	86–89
23.	और पता चल गया	90–94
24.	सफाई	95
25.	भय	96–98
26.	विदाई	99–114
27.	अंत	115

प्रस्तावना

मेरे ऊपर आसमान गिरा। आगे का कुछ भी सुनना बंद हो गया।

तो यह था तूफान, जिसका आभास मेरी छठी इन्द्रिय दे रही थी।

नहीं, यह नहीं हो सकता। शायद मैं कुछ गलत सुन रही हूँ।

मैं आप पर बोझ नहीं बनूँगी पापा। मैं तो आपके यहाँ मेहमान बन कर आ रही हूँ। जब तक रहूँगी, आपकी बगिया महकाऊँगी। दीदी की किताबों से पढ़ लूँगी। उसका बचा डब्बा खा लूँगी।

मुझे जाना तो वैसे भी है। बाबुल का आँगन देर-सबेर सभी का छूटता है। पर मुझे हल्दी, मेंहदी लगाकर बैंड बाजे के साथ विदा करो पापा।

शादी न भी हो तो कोई बात नहीं, पर यह कैसी विदाई पापा ? ?

– इसी किताब से

यह कहानी नहीं यथार्थ है। काश यह कहानी होती।

कन्या भ्रूण हत्या को लेकर बेचैनी कई वर्षों से थी।

व्यवसाय की वजह से इस गन्दगी को बहुत करीब से देखा। मैं पेशे से सर्जन। लेखन से दूर-दूर तक सरोकार नहीं। न तो विशेष पढ़ा, न किसी साहित्य गोष्ठी में सम्मिलित हुआ।

पेट्रोल जमा था। एक छोटी सी घटना ने चिन्गारी का काम किया। विस्फोट आपके सामने है।

एक जगह भ्रूण हत्या की बात चली तो मेरे मित्र ने कहा – ''सर, आपने देखा, मेरठ के डॉक्टर को टी.व्ही. चैनल वालों ने नकली मरीज बनकर परेशान किया। उन्होंने उसे आर्थिक परिस्थिति व पारिवारिक मजबूरी की दुहाई दी। मैडम मानवीयता के नाते तैयार हुईं।

हम लोगों के साथ एक नॉन मेडिको मित्र खड़ा था। उसने कहा – ''और डॉक्टर साहब उस लेडी डॉक्टर ने पैसे माँगे भी कितने ? मात्र पन्द्रह सौ रुपये। आज की तारीख में डेढ़ हजार रुपयों की कीमत ही क्या है ?

मैंने कहा कि ''सवाल पन्द्रह सौ या पन्द्रह हजार का नहीं। पैसे की कीमत वैसे भी सापेक्ष होती है। गरीब को डेढ़ हजार ही डेढ़ लाख महसूस हो सकते हैं।

मेरी बेचैनी इस बात की है कि हम कितनी आसानी से भ्रूण हत्या कर रहे हैं।

मेरी बेचैनी यह है कि हाथ-पाँव बनने के पहले हम उसे जीव क्यों नहीं

मानते।

हम चार हफ्ते के उस तैरते हुए मत्स्यावतार में जीवन दर्शन क्यों नहीं कर पाते ?

एक कोशिका अपने आप में सम्पूर्ण जीवन है।

माता की एक कोशिका से ही तो यह सम्पूर्ण शरीर बना है। आजकल भ्रूण कोशिकाओं स्टेम सेल पर खूब रिसर्च हो रहा है। इसमें असीमित क्षमताएँ दिख रही हैं। इससे कोई भी अवयव बनाने की सम्भावनाएँ दिख रही हैं और आप कहते हें कि अभी हाथ-पैर नहीं उगे तो उसमें जान कहाँ। उसके साथ कुछ भी कर लें उसमें अनर्थ नहीं।

आपके हिसाब से चलें तो उसमें जान तब तक नहीं आई, जब तक कि वह कन्या चिल्ला-चिल्लाकर न बोले कि ''प्लीज मुझे मत मारो।''

जीवन के लिये संघर्ष करना तो प्रकृति का नियम है। भोजन के अभाव में पक्षी भी कमजोर चूजे को घोंसले के नीचे ढकेल देते हैं परन्तु ढकेलते समय वह परिवार यह नहीं सोचता कि लड़के चूजे को बचा लिया जाये। शेर अपने बच्चों को मारता है। बिल्ली अपने ही बच्चों को प्रसव के बाद भयंकर भूख की वजह से खा जाती है। कोई भी उसमें लिंग भेद नहीं करता।

•••

जब लिखने बैठा तो समस्या की जड़ तक जाने की इच्छा हुई। समाज के हर वर्ग के लोगों का इन्टरव्यू लिया। बड़ी रोचक जानकारी सामने आई।

शुरू किया अपनी पत्नी से।

उसने कहा - जिसको जरूरत से ज्यादा बच्चे हो जाएँ तो वह उन्हें पालेगा कैसे ? हाँ सरकार को एबॉर्शन के साथ परिवार नियोजन का आपरेशन करवाना अनिवार्य कर देना चाहिये।''

अच्छा सुझाव था।

एक चिकित्सक मित्र से पूछा - ''तुम्हारे यहाँ फीमेल एबॉर्शन करवाने वाले कितने आते हैं ?''

उसने कहा - ''बॉस! अपना धंधा तो कुँवारी माताएँ चला रही हैं। कई तो नियमित ग्राहक बन गई हैं।

दु:ख हुआ सुनकर।

एक चुटकुला सुना था - अपने कॉलेज के दिनों में -एक 12 वर्ष की लड़की ने अपनी सहेली से पूछा - ''तुम्हें मालूम है, बच्चे कैसे पैदा होते हैं ?''

उसने जवाब दिया - ''मुझे तो यह भी मालूम है कि बच्चे कैसे पैदा नहीं होते हैं।''

तीस-पैंतीस वर्ष पुराना यह चुटकुला आज की हकीकत बन चुका है। पश्चिम ने हमारे बच्चों को पिज्जा-बर्गर के साथ डेटिंग भी दिया। आज हमारी मासूम बच्चियाँ असुरक्षित हैं।

समस्या हमारे सिर पर खड़ी है। हम शुतुरमुर्ग की तरह रेत में सिर छिपाए बैठे हैं। स्वस्थ यौन शिक्षा बच्चों को देना जरूरी हो गया है नहीं तो वे आपस में और इन्टरनेट के जरिये दूषित ज्ञान लेंगे।

एक और ज्ञानी मित्र से बात की तो उसने कहा - ''अरे डॉ. पाठक यह समस्या सिर्फ मध्यम वर्ग की है। हमारे पीछे झोंपड़-पट्टी है। वहाँ ढेर सारी लड़कियाँ खेलती देखती हैं। उनके पास न तो सोनोग्राफी करवाने के पैसे हैं ना ही एबॉर्शन करवाने के। हमारी सब्जी बेचने वाली मना रही थी कि इस बार उसे लड़की हो। हमें आश्चर्य लगा। उसने कहा - ''दो लड़के हैं। किसी काम के नहीं। अभी खा-पीकर घूमते रहते हैं। कुछ दिनों में दारू पीने लगेंगे और, और किसी काम के नहीं रहेंगे। लड़की हो तो कम से कम हाथ तो बटाएँगी।''

दलील सुनकर मजा आया।

वैसे ही, बड़े लोगों के यहाँ लड़की हो तो भी क्या फर्क पड़ता है।

पिसता सिर्फ मध्यम वर्गीय आदमी है।

एक लेडी डाक्टर से मिला तो वह बोली - ''सरकार ने अनुमति दी है, मरीज खुद हमारे पास आ रहा है। हम उसे क्यों छोड़ें। हम नहीं करेंगे तो दाई,

कम्पाउण्डर को अपने घर बुलवाकर बच्चा गिरवा लेंगी। अस्वच्छ वातावरण व सुविधाओं के अभाव में किये गए एबॉर्शन में माँ को भी खतरा हो जाता है। तब यही लाकर भर्ती करते हैं। ज्यादा अच्छा है पहले ही हमारे पास आ जाऐं।

और सर, हम तो मानते हैं कि सारी नैतिक जिम्मेदारी सोनोग्राफी करने वाले की है।

हम लोग जो गर्भपात कर रहे हैं वह पूर्णतया एम.टी.पी. के नियमों के अन्तर्गत है। उसके अनुसार यदि स्त्री का मानसिक संतुलन बिगड़े, अथवा गर्भ निरोधन विफल हो तब गर्भपात करने की अनुमति है। हम कोई नाजायज काम नहीं कर रहे हैं।

मैंने कहा ''मैडम, नियमों के संदर्भ में मुझे एक किस्सा याद आ रहा है। एक मुजरिम को फाँसी की सजा सुनाई गई। उसके वकील ने कहा चिन्ता मत करो। मैं तुम्हें बचा लूँगा। और नियमों के अंतर्गत ही बचाऊँगा। जैसे ही कैदी को तख्ते पर चढ़ा कर लटकाया गया, वकील ने कहा तुरंत उतारिये। आपने ऑर्डर दिया था कि मुजरिम को फाँसी पर लटकाया जाये। उसकी सजा पूरी हो चुकी। कैदी बच गया। उसके बाद संशोधित हुआ कि तब तक लटकाया जाये जब तक कि मर न जाये।''

तो मॅडम, शब्दों से खेलना वकीलों का काम है। हम चिकित्सकों को यह शोभा नहीं देता। स्त्री से साक्षात्कार करते ही आपको समझ में आ जाएगा

कि वह जायज गर्भपात करवाने आई है या नाजायज। आगे आपका जमीर है। इसमें फैमिली डॉक्टर जिसने सोनोग्राफी वाले के पास भेजा, सोनोग्राफी करने वाला, स्त्री रोग चिकित्सक, निश्चेतता देने वाला, सभी नैतिक रूप से जिम्मेदार हैं। खैर....

ऐसी तरह तरह की प्रतिक्रियाएँ सुनने को मिलीं। लिखना मेरा पेशा नहीं। दर्द हुआ, उसे व्यक्त किया। चाहता हूँ मेरी पीड़ा एक आन्दोलन का रूप ले। चेतना फैलाने से विवेक आएगा और एक बार जनमानस का विवेक जागा तो नियम कानूनों की आवश्यकता नहीं रहेगी।

स्त्री शिक्षा के बारे में लोग सजग हो चुके। अच्छा लगता है जब लड़कियों के झुंड के झुंड बस्ता लेकर स्कूल की तरफ दौड़ते नजर आते हैं। अच्छा लगता है जब अपने बच्चे को लेकर लोग लम्बी कतार में पोलियो की बूँदे पिलाने के लिये खड़े दिखते हैं। वहाँ लोग चेत चुके।

इस महायज्ञ में दो चार समिधाओं के अर्पण के लिये आपका सविनय आहवाहन कर रहा हूँ।

यदि यह कृति आपके अंतरमन को छूती है, और एक कली भी असमय तोड़े जाने से बच जाती है, तो अपने प्रयास को मैं सार्थक समझूँगा। आपकी प्रतिक्रिया जानने के लिए मैं उत्सुक रहूँगा ।

डॉ. डी.यू. पाठक
जे.डी.ए. 14/307, विजय नगर,
कृषि उपज मंडी के पास जबलपुर-482002
dupat hak@gmail .com

अस्तित्व ...

अस्तित्व में आने का आज भ्रूण का सैतालीसवाँ दिन...। पिछले कई दिनों से सुनाई देने लगा था। पलकें खुल नहीं रही थीं परन्तु रातों का अंधेरा, सुबह की लालिमा व दोपहर की चौंधियाने वाली रोशनी समझ में आने लगी थी।

हाथ-पाँवों में हिलने की बेताबी महसूस होने लगी थी। हरकत में आते ही मैंने अपनी सहोदरी को एक धक्का दिया। उसके हाथ-पैर अभी निष्क्रिय थे। उसे अजीब सा लगा। थोड़ी देर बाद उसमें भी जीवंतता आई। वह हमारे लिये रोमांचक क्षण था। आज से मैं तेरी दीदी और तू मेरी छोटी। क्योंकि मेरे हाथ-पैर तुमसे पहले हिले।

इससे पहले ममता की उस कोख में हम अनियंत्रित रूप से तैर रहे थे। माँ के करवट बदलने से कभी इधर गिरते तो कभी उधर। उसके चलने से हम भी ऊपर नीचे होते। हमने माँ के साथ सोना, जागना सीख लिया था। दिन में लगातार इधर-उधर गिरते पड़ते रहने से हम भी सो नहीं पाते।

बाहर की दुनिया दिखती तो थी नहीं, आवाजों से कुछ-कुछ कल्पना होने लगी थी।

पूर्व जन्म की यादें बची थीं परन्तु जैसे यहाँ समझ बढ़ रही थी, वे यादें धूमिल पड़ती जा रही थी। लगता है, एक समय आएगा, जब पिछला सब कुछ साफ हो जाएगा। इस जीवन की शुरुआत फिर से एक कोरी स्लेट पर होगी। हांलाकि इस पर लिखने की शुरुआत भी जन्म से पहले ही हो चुकी है। माँ-बाप की अच्छी बुरी बातें, इनके विचार, इनका व्यवहार आदि इस पर अंकित हो रहा है।

शायद इसी को संस्कार कहते हैं।

''सुनो जी! मेरी शंका सही निकली, आज पेट में कुछ हलचल भी हुई है।''

''और सुनाओ तुम तो....

शर्म नहीं आती, पहले से जो दो पैदा करके रखी हो, क्या उससे मन नहीं भरा?''

''लेकिन इसमें मेरी क्या गलती ? तुमने ही तो कहा था कि एक चान्स और लेते हैं।''

''ये बात बड़ी सिनसियरली सुन ली तुमने। यह नहीं सोचा कि अभी मैं आफिस के चक्कर में कितना ज्यादा उलझा हुआ हूँ। उधर छोटी बहन भी छाती पर बैठी है। उसकी शादी करनी है। बाबूजी रिटायर हो चुके हैं।''

मैं बात-बात में बोल क्या गया, तुम बिल्कुल आज्ञाधारक बन गईं।

•••

कोख में हलचल हुई।

हमें पापा की यह प्रतिक्रिया अच्छी नहीं लगी।

हमें तो यह उम्मीद थी कि इस समाचार से पापा रोमांचित होंगे और शाम को जश्न मनेगा।

हमें उस मेहमान की तरह महसूस हुआ जिसके आने की चिट्ठी आते ही घर में चिन्ता व्याप्त हो जाती है।

क्या हम उस बिन बुलाए मेहमान की तरह इस घर में आ रहे हैं ??

माँ की सिसकियों से हमें झटके लग रहे थे।

मानसिक भी व वास्तविक भी।

पिता का पहला इम्प्रेशन हम पर कुछ अच्छा नहीं पड़ा। खैर!

•••

''अब अपना यह रोने-धोने का नाटक बंद करो और मेरा डब्बा दो। मुझे ऑफिस भी जाना है। एक तो ऑफिस में बॉस की खाओ और घर में ये तमाशे, तुम न तो मुझे जीने दोगी, न मरने।''

''ऐसी अशुभ बातें मत बोलो जी!'' - माँ ने कहा।

वह पतिव्रता इतनी जली-कटी सुनने के बाद भी अपने सुहाग को इतना महत्व दे रही थी।

''शाम को वापस कब आएँगे ?''

''क्यों... ? अब और क्या बचा है, बताने को ?''

''नहीं, मैं कह रही थी कि..... ''

''तुम सीधे सीधे कह दिया करो। यह कहना छोड़ो कि मैं कह रही थी कि...''

''क्यों न हम डॉक्टर साहब से अपना चेकअप करवा लें।''

''अपना नहीं, खुद का कहो। यहाँ तो काम डल गया। मैं ठीक न होता तो यह नौबत ही क्यों आती।

और हाँ, वो डॉक्टर क्या करेगा ?

मुझे जच्चे-बच्चे का स्वास्थ्य, उनके लिये मंगल कामना, उनके आहार और शिशु विकास के बारे में लेक्चर सुनने का बिल्कुल मूड नहीं है।''

•••

हमें यह सब सुनकर बहुत खराब लग रहा था। आश्चर्य भी लग रहा था हमारी माँ सब ऐसे सुन और सह रही थी मानो उसी ने कोई इकतरफा अपराध किया हो, तथा इस सब में पिता का कोई रोल ही नहीं था। खैर!

''मुझे तो यह जानना है कि इस बार है क्या ? अब मुझे एक और लड़की पालने की हिम्मत नहीं है। कुछ पता चले तो फैसला कर लें।''

•••

भ्रूण कन्याओं की समझ में नहीं आ रहा था कि ये लोग किस फैसले की बात कर रहे हैं।

•••

''कैसी बात करते हो जी फैसला तो कुदरत करती है। फैसला करने वाले हम कौन होते हैं।'' माँ ने कहा।

''वाह मैडम, एक और पैदा करने का फैसला तो आपने ही किया ? छोड़ दिया होता अपने आप को कुदरत पर और लगा दी होती अब तक लाईन ।''

''वाकई शायद यह सब हम तय करके प्रकृति के विरुद्ध जा रहे हैं और इसकी कीमत हमें चुकानी पड़ेगी। क्योंकि प्रकृति अपना सन्तुलन बनाए रखती है। ईश्वर की ताकत से लड़कर और प्रकृति के विरुद्ध जाकर हम कभी सुखी नहीं रह पाएँगे।''

''और वैसे भी मैंने सुना है कि अब ऐसा कुछ पता करना गैर कानूनी है ?''

•••

कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि ये लोग क्या करना चाहते हैं, जो गैर कानूनी है!!

•••

''सुनो, हर प्रतिबंध का तोड़ होता है। गुजरात में सबसे ज्यादा दारू बिकती है और तो और आश्रम रोड पर आपको कदम-कदम पर शाम के समय बेचने वाले खड़े मिलेंगे। दुकानों में लाईन में लगने की भी जरूरत नहीं।''

नियम कानून कागजों पर होते हैं। व्यवहारिकता में नहीं।

सोनोग्राफी रुकी नहीं है। काम नाजायज होने से डॉक्टरों की और चाँदी हो गई है। रेट बढ़े हुए हैं। पर देखना, वे भी धीरे-धीरे कॉम्पटीशन की वजह से

कम होंगे। फिर चलेगी उसी की जिसके रिपोर्ट की गारंटी होगी।

यह एक सुनियोजित जुर्म है। पूरा टीम वर्क है। सुपारी डॉक्टरों की उस टीम को दी जाए जो इसमें महारत रखते हैं। विक्टिम को चूज करने में गल्ती न करें। रिपोर्टिंग में गल्ती न हो। गोपनीयता से हत्या हो। किसी को पता न चले। लाश सही ढंग से ठिकाने लगाई जाए। हर काम को अंजाम देने वाले लोग अलग होते हैं। कभी भी सफलता किसी एक या दो के अच्छे काम करने में नहीं मिलती।

•••

हमें अंदर यह समझ में नहीं आ रहा था कि ये सुपारी क्या होती है, ये लोग किस काम को अंजाम देने की बात कर रहे हैं - खैर।

•••

''तो .. सोनोग्राफी हो जाएगी मैडम। इसकी चिन्ता आप न करें। हर आदमी बिकता है। उसकी अपनी कीमत अलग हो सकती है।

डॉक्टर इन्सान पहले हैं और डॉक्टर बाद में। ये लोग तो नाजायज ऑपरेशन करके पैसे कमा रहे हैं। जब ये सुन्दर स्वस्थ शरीर की चीराफाड़ी कर देते हैं, तो इनमें और उस सड़क के गुंडे में क्या फर्क है ? खाली यही ना, कि वह गुंडा बिना बेहोशी के चाकू चलाता है - बस। चलाते दोनों ही पैसों के लिये हैं।

•••

पुत्र सहारा ...

कोख में हलचल हुई।

सुन छोटी, आज नानी आने वाली है। कल फोन आया था। नानी हम लोगों के लिये लड्डू लाएगी।

दीदी, मुझे तो नमकीन और तीखा ज्यादा पसंद है।

तभी तो बीच-बीच में तुम माँ को चाट खाने पर मजबूर करती हो। अन्यथा वह यह सब पसंद नहीं करती।

•••

''सफर में ज्यादा दिक्कत तो नहीं हुई माँ ?''

''नहीं बेटी, सीट मिल गई थी। साथ वाले भले लोग थे।''

''बाबूजी कैसे हैं ?''

''ठीक हैं। बाईपास के बाद थोड़े कमजोर हो गए हैं। डॉक्टर का कहना है कि वह कमजोरी मानसिक है, क्योंकि कहते हैं कि उस ऑपरेशन के बाद खून का दौरा बढ़ने से तबियत ज्यादा सुधर जाती है। वैसे अब टहलने भी जाने

लगे हैं।''

''तुम बेकार में अकेले चली आई।''

''बिटिया, तुमसे बहुत दिन से मिली भी नहीं थी, यह खबर एक बहाना बन गई।''

और वैसे भी मुन्नी मुझे तुम्हारे यहाँ रहना ज्यादा अच्छा लगता है। लोक लाज वाली बात न होती तो मैं और तुम्हारे बाबूजी तो यहीं पड़े रहते।

''भैय्या कैसे हैं ?''

''अपनी पत्नी व बच्चों के साथ मस्त है। उसे हम लोगों की कहाँ परवाह। बाबूजी के ऑपरेशन के समय भी मुश्किल से दो दिन का समय निकाल पाया। कहता है कमाऊँगा नहीं तो तुम लोगों के बुढ़ापे के खर्चे कहाँ से निकालूँगा। तुम्हीं बताओ बिटिया, क्या हम लोग उस पर बोझ हैं ? अरे यह घर उसके नाम न किया होता तो अपना मकान बनाने के लिये अभी और दस साल घिसता। हमारी तो सबसे बड़ी गल्ती वही हुई। उस समय तो बहुत आगे पीछे हो रहा था। हमने भावावेश में आकर सोचा, बुढ़ापे का सहारा तो आखिर मुन्ना ही है। मकान रखकर क्या करेंगे। आज नहीं तो कल सब कुछ उसी का है। काल करे सो आज कर। जीते जी देकर मजा ले लें। वही गलती भुगत रहे हैं। एक चीज हमेशा ख्याल रखना किसी को कभी भेंट में कोई वस्तु मत देना। भले ही उसी वस्तु को बेचकर नगद दे दो, क्योंकि वस्तु का मूल्यांकन लेने और देने वाले दोनों अपने अपने ढंग से करते हैं, और उसमें बहुत फर्क होता है।''

''लेकिन भैया तो ऐसे न थे।''

''अरे तुम्हारी भाभी बहुत तेज और समझदार है। मुन्ना शादी के पहले ऐसा न था।''

''माँ छोड़ो भी.... मैं हूँ ना तुम लोगों के लिये।''

''नहीं बेटी कुछ भी कहो बेटी तो पराई होती है।''

''यही तो मेरी समझ में नहीं आता माँ। हम लोगों को तुम पराई कहती हो। यहाँ ससुराल आकर यह सुनना पड़ता है कि ये यहाँ की सगी कैसे हो सकती है ? है तो दूसरे घर की।

औरत न मायके की रह जाती है और न ससुराल की। जब तक हम यहाँ की हो पाएँगी तब तक जिन्दगी के सुनहरे वर्ष खत्म हो चुके होंगे। औरत को सारे अधिकार रिटायरमेंट के बाद मिलते हैं, जब वह सास बनती है। कैसी विडम्बना है।

अम्मा, जब तक तुम और तुम्हारा यह सिस्टम सुधरता नहीं तब तक ऐसे ही सब लोग रोते रहोगे।''

•••

भ्रूण कन्याएँ आपस में गुटर गूं करने लगीं।

क्यों दीदी – इन लोगों ने ये सामाजिक व्यवस्थाएँ इतनी जटिल क्यों बनाकर रखी हैं। व्यवस्थाएँ जीवन को सरल व सुखी बनाने के लिये होनी चाहिये। इनसे ज्यादा सुखी तो जानवरों का झुंड रहता है। न कोई सास, न बहू, न कोई तरीके

न नियम।

नहीं छोटी, हजारों सालों में जो परम्पराएँ उन्नत हुईं वे गलत नहीं हो सकतीं। ये लोग उसका ढंग से पालन नहीं कर रहे।

बहू को घर की चाबी देना एक परम्परा है। ये लोग चाबी देने की रस्म तो निभा देते हैं परन्तु मन से अलग नहीं हो पाते। चाबी देने का संकेत है अब इसके आगे आप ध्यान हटा लो और आई हुई नई मालकिन को घर के सारे सूत्र सौंप दो। लेकिन ऐसा होता कहाँ है ?

पचास के बाद वानप्रस्थ। पचहत्तर के बाद संन्यास, याने पूरा ध्यान हटा दो लेकिन ऐसा होता कहाँ है ? बुढ़िया सारे घर को परेशान किये रहती है। उम्र अनुभव की दुहाई देकर घर को अपने हिसाब से चलाना चाहती है।

परम्पराओं का स्वरूप बदलने से इन लोगों को दुख उठाना पड़ रहा है।

•••

प्रेरणा ...

''बेटी तुम्हारे कमरे में कोई अच्छी सी फोटो नहीं लगी ? अब दीवालों पर से ये सीन सीनरी और मॉडर्न पेंटिंग हटाओ। ऐसी तस्वीर टाँगो, जिसे देखकर तुम्हारे मन में उन गुणों वाले बच्चे को जन्म देने की प्रेरणा पैदा हो।''

''इन सब चीजों से क्या फर्क पड़ता है माँ।''

''क्यों नहीं। तुमने अभिमन्यु की कहानी नहीं सुनी ? आज तुम्हारा विज्ञान वहाँ तक पहुँचा ही नहीं। कुछ 50-60 वर्षों बाद तुम लोग शायद समझ पाओ कि अंदर बच्चा सब सुनता है, सब समझता है, भले ही अपनी प्रतिक्रिया नहीं दे पाता।''

•••

नानी कितना सही कह रही है। हमें सब सुनाई दे रहा है, सब समझ आ रहा है। यह इनकी समझ में पता नहीं कब आएगा। भले ही हम बोल नहीं सकते, लेकिन समझ सब रहे हैं। कई बार ऐसा लगता है कि बोल पाते तो कितनी बार इन्हें टोकना पड़ता कि प्लीज ऐसा मत बोलो, हम सुन रहे हैं।

तुम्हारी कोख कोई साउण्ड प्रूफ कान्फ्रेन्स हॉल नहीं है कि बाहर की आवाजें अंदर न आएँ। खैर....

''देखो बिटिया मैं तुम्हारे लिये क्या लाई हूँ।''

''अहा! कितनी सुन्दर कृष्ण जी की तस्वीर है।''

''मुझे ऐसा ही पोता चाहिए बेटी। अभी से ऑर्डर दे रही हूँ। बाद में न कहना कि पहले से बताया नहीं था। हाँ।''

•••

दीदी मुझे यह समझ में नहीं आता कि ये लोग हमेशा राम, कृष्ण या शिवजी की तस्वीरें ही क्यों खरीदते हैं। क्यों किसी के मन में नहीं आता कि झाँसी की रानी, रानी दुर्गावती या मदर टेरेसा की तस्वीर खरीदी जाए। क्या इनमें वीरता नहीं थी ? क्या ये चरित्र में किसी पुरुष से कमजोर थीं ?

छोटी, मैं तुम्हारे सवालों का कई बार जवाब नहीं दे पाती ? बाहर निकलकर इन्हीं से पूछेंगे।

•••

सुहागन ...

आज गोद भराई की रस्म है। खूब नाच-गाना, खाना-पीना होगा। छोटी आज तेरी जो इच्छा होगी वह माँ मांगेगी और तुम्हें खाने को मिलेगा।

किसी ने आशीर्वाद दिया -

''सदा सुहागन रहो बेटी!''

दीदी ये सुहागन क्या होता है ? छोटी भ्रूण कन्या ने बड़ी से पूछा।

छोटी, ये लोग, ''तुम्हारा पति हमेशा जीवित रहे, इसे सदा सुहागन रहो कहते हैं।''

असल में पति घर का आधार होता है, क्योंकि वह कमाकर घर वालों को पालता-पोसता है। इसलिये उसकी जिन्दगी मूल्यवान है।

''लेकिन हमारी माँ की तनख्वाह तो पापा से ज्यादा है तो हमें कौन पाल रहा है माँ या पापा ?''

''और हमारी माँ हमेशा जिन्दा रहे इसके लिये यदि कोई पापा को आशीर्वाद

देना चाहे तो क्या कहेगा ?''

''ऐसा कोई भी आशीर्वाद तो बना ही नहीं छोटी क्योंकि इन लोगों को उसकी कभी आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई।

पत्नी मर जाए तो ऐसा कोई नुकसान नहीं होता। फिर से ताजी ताजी लड़की दहेज के साथ लाई जा सकती है।''

लेकिन दीदी जब विधवा से कोई शादी नहीं करता तो विधुर से कैसे कर सकता है ?

''उफ, पता नहीं तुम्हारे सवाल कहाँ खत्म होंगे।''

•••

जानवर की लड़की ...

एक झटके से नींद खुली। माँ दूध वाले की आवाज से एकाएक उठी थी।

''बाई जी एक और बर्तन लाना। आज तेली भी लाया हूँ।''

''बधाई हो, बछिया हुई क्या ?'' माँ ने पूछा।

''अरे कहाँ बीबीजी। इस बार भी बछड़ा।

यह भैंस तो लगता है मेरे धंधे को चौपट करके रहेगी, बछिया दे तो धंधा कुछ आगे बढ़े।''

''अब क्या करोगे।''

''करना क्या – मरेगा भूखा।''

''बछिया होती तो उसे दिल से पालता। दूध देती, बच्चे भी देती – काम आगे बढ़ता, दो पैसा मिलता। ये किस काम का। ऐसे नहीं मरा तो कसाई को देना पड़ेगा।''

•••

कोख में फिर हलचल हुई।

दीदी, जानवरों में लगता है लड़कियों का महत्व ज्यादा है। हम इन्सान की जगह भैंस की कोख चुनते तो अच्छा होता ना ?

''बात तो सही है छोटी''

''देखो उधर मुर्गे को कोई नहीं पूछता बेचारा कट जाता है। मुर्गियाँ अंडा देती है, चूजे देती है तो उसे कोई नहीं मारता, उसकी खूब इज्जत होती है।''

''लेकिन औरत भी तो बच्चे देती है। फिर उसकी इज्जत क्यों नहीं होती ?''

''क्या पता ?''

•••

क्या है ...?

''कहाँ जा रही हो बेटी।''

''माँ जरा इनके साथ काम से जा रही हूँ। घंटे भर में आ जाऊँगी।''

हम अस्पताल की तरफ चल पड़े।

''आप डॉक्टर की रेफरिंग स्लिप लाई है क्या ?'' – रिसेप्शनिस्ट

डॉक्टर साहब ने हमारे लिये फोन पर अपाईन्टमेन्ट दिया था।''

''आप उस कमरे में जाकर बैठ जाएँ। आपकी बारी आने पर बुला लेंगे।''

•••

''सर, नाम फीड करूँ क्या ?''

''सर ने सिस्टर को घूर कर देखा।''

''सॉरी सर, मैं भूल गई थी।''

तुम्हें कितनी बार समझाया कि हमारे पर्सनल मरीज, जिनके लिये फोन पर

समय लिया गया है, उनका नाम वगैरह लिखने की जरूरत नहीं है। आज कितने विश्वास से तमाम डॉक्टर हमारे पास केस भेजते हैं। उसे हमें निभाना चाहिये।

''जी सर।''

''सर बुरा न मानें तो एक सवाल पूछूँ।''

''पूछो सिस्टर, कुछ भी हो, तुम हो तो मेरी वीक पाइन्ट''

''आप उन्हें बताएँगे कैसे आजकल तो फोन पर बात करके भी कोई फँस सकता है। ये सारे चैनल वाले डॉक्टरों के दुश्मन बन गए हैं।''

अरे सिस्टर तुम बहुत भोली हो। ये जर्नलिस्ट लोग – बी.ए. पास हमारी बुद्धि से क्या टक्कर लेंगे। बुद्धि किस दिशा में लग रही है वह छोड़ो, पर बुद्धि थी, तभी तो पीएमटी पास करी। न लिखकर देने की जरूरत है न फोन करने की सिर्फ मरीज के रिश्तेदार से इतना ही कहना है कि ''डॉक्टर साहब से बोलना कि रिपोर्ट फ्राईडे को भिजवा देंगे।'' फ्राईडे मतलब फीमेल। फ्राईडे मतलब शुक्रवार, याने देवी माँ का दिन। मनडे मतलब मेल, यानि सोमवार – शंकर जी का दिन। बस हो गया काम। सो सिम्पल।

''और पैसे ?''

पैसे तोहफे में ले लो। लिफाफे पर लिखवा लो शुभकामनाओं के साथ।

•••

''नेक्स्ट।''

अंदर से आवाज आई

''आप ऐसे अंदर आईये।''

वेटिंग रूम का दरवाजा खुला और हम लोगों को लेकर माँ अंदर घुसी।

डॉक्टर ने कहा – ''इस तरफ सिर करके लेट जाईये'' सिस्टर इनसे पूछ लेना ब्लॅडर भरा है कि नहीं।

''क्यों पानी पीकर आई हो ना ?'' बाथरूम तो नहीं गई ?

''जी बताया गया था। कितनी देर लगेगी ? अब रुकना मुश्किल हो रहा है।'' – माँ ने कहा।

''बस मुश्किल से दस मिनट। सर इस काम में बहुत एक्सपर्ट हैं'' सिस्टर ने सर की तारीफ की।

हमें समझ में नहीं आया कि सर किस काम में एक्सपर्ट है ।

•••

सोनोग्राफी का कमरा छोटा सा था। बिस्तर के दाहिनी तरफ सिरहाने के पास सोनोग्राफी की मशीन रखी थी। मशीन के सामने डॉक्टर साहब के बैठने के लिये बिना हत्थे वाली कुर्सी रखी थी। बाँयी तरफ सिस्टर खड़ी थी। कमरा छोटा होने से ए.सी. की ठंडक काफी तेज थी। दरवाजा बंद होते ही बाहर की आवाजें आना बंद हो गया। कमरे के मद्धिम रोशनी से अभ्यस्त होने में माँ को कुछ समय लगा। माँ ने चारों तरफ सिर घुमाकर कमरे को देखा। सामने कैलेंडर टंगा था,

जिसमें साई बाबा की तस्वीर थी।

एक दीवार पर बोर्ड लगा था

''यहाँ पर जन्म से पहले भ्रूण के लिंग का परीक्षण नहीं किया जाता। यह एक दंडनीय अपराध है।''

सिस्टर ने माँ से कहा – ''आराम से लेट जाइये और कमरबंध ढीला कर लीजिये।''

ऐसा करते ही हम लोगों को बड़ी राहत मिली। एक तो गर्मी से परेशान थे, दूसरा, माँ को निवृत्त होने से रोका गया था। उस भरे हुए ब्लॅडर के दबाव से हम लोग काफी दरे से परेशान थे।

छोटी ने कहा – ''दीदी, बहुत देर बाद हाथ पैर लम्बे कर पाए। क्यों दीदी, अब क्या होगा ?''

''देखती जाओ। मैं खुद भी तो यह सब पहली बार अनुभव कर रही हूँ।''

सिस्टर ने माँ के पैरों पर चादर ओढ़ाई और कुर्ता ऊपर करने को कहा। दूसरी तरफ डॉक्टर साहब वॉश बेसिन में अपना हाथ धे रहे थे। तौलिये से हाथ पोंछते-पोंछते वे हमारी तरफ आए और सिस्टर से पूछा – ''ब्लॅडर फुल है कि नहीं ?''

''जी सर।''

''इसका विशेष ध्यान दिया करो। नहीं तो ठीक से रिपोर्ट नहीं दे पाते।''

''जी सर।''

हाथ पोंछने के बाद उन्होंने ''यहाँ भ्रूण के लिंग का पता नहीं किया जाता....'' वाले बोर्ड के ऊपर लगी हुई खूँटी में तौलिया टाँग दिया। उससे काम शुरु करने के पहले वह बोर्ड ढक गया।

ए.सी. की ठंडक के बावजूद माँ के माथे पर पसीने की बूँदें उभर आई थीं। सिस्टर ने माँ का दाहिना हाथ बगल में सीधा रखने को कहा। बाँये हाथ को अपने हाथों में लेकर हल्के से दबाया और तनाव रहित होने के लिये कहा।

सोनोग्राफी की मशीन पर एक तरफ तीन तरह के प्रोब टंगे थे। हर काम के लिये अलग-अलग।

माँ बार-बार पीछे पलट कर सोनोग्राफी का मॉनीटर देखने की कोशिश कर रही थी। डॉक्टर साहब ने माँ से कहा - ''आप आँखें बंद करके शान्ति से लेटे रहिये। बार-बार हिलेंगी या करवट बदलेंगी तो काम अच्छे से नहीं हो पाएगा। सिर्फ दस मिनट के लिये सहयोग दीजिये। आपको कोई तकलीफ नहीं होगी।''

माँ ऊपर से तो शान्त रहने की कोशिश कर रही थी परन्तु बेचैनी से उसकी बढ़ती धड़कनों को हम महसूस करने लगीं।

''क्यों दीदी ?''

''क्या ?''

''माँ की धड़कन इतनी तेज क्यों है ? मानो किसी परीक्षा का नतीजा आने वाला हो।''

''हाँ छोटी। मुझे भी समझ में नहीं आ रहा।''

डॉक्टर साहब ने बीच वाला प्रोब उठाया और सिस्टर से जेली माँगी। उन्होंने थोड़ी प्रोब पर निचोड़ी और ढेर सारी माँ के खुले पेट पर। ठंडी जेली से हमें गुदगुदी हुई। अंदर हम लोग सहमे हुए थे। सोनोग्राफी का प्रथम अनुभव होने से भय लग रहा था। कहते हैं, हर महीने करवानी पड़ती है। धीरे-धीरे डर निकल जाता होगा।

जैसे ही प्रोब पेट पर रखा गया, जेली की वजह से ध्वनी की सारी तरंगें हम तक आने लगीं। एक अजीब सा कम्पन महसूस होने लगा। उधर डॉक्टर साहब ने जैसे-जैसे तरंगों को हम लोगों पर फोकस किया, कम्पन बढ़ता गया। हमें कानों में सैकड़ों मच्छरों के भुनभुनाने की आवाजें बेचैन करने लगीं। छोटी ने मुझे तेजी से पकड़ लिया। डॉक्टर साहब तरंगों को कभी मेरे ऊपर फोकस करते तो कभी छोटी पर। जिसके ऊपर से तंरगें हट जातीं, उसे थोड़ी देर के लिये राहत मिल जाती। हमारी स्थिति उन रोलर कोस्टर पर बैठे लोगों जैसी थी जो चीखने-चिल्लाते रह जाते हैं। उन्हें छुटकारा तभी मिलता है जब वह दैत्याकार झूला रुकता है। पूरे शरीर में कम्पन और कानों में भन-भन से बुरे हाल थे।

डॉक्टर साहब अलटा-पलटा कर कभी मुझे तो कभी छोटी को घुमा-घुमाकर चारों तरफ से देख रहे थे।

शायद माँ को तकलीफ नहीं हो रही थी क्योंकि उसके हृदय की गति

सामान्य हो चली थी।

डॉक्टर साहब बड़े ध्यान से कुछ समझने की कोशिश कर रहे थे।

माँ ने उनसे पूछा ''क्या है सर, मेल या फीमेल ?''

वे बोले – ''देखते हैं।''

''क्यों दीदी ? यह मेल-फीमेल क्या होता है ?''

''क्या पता!''

डाक्टर साहब बोले – ''आपके दोनों बच्चे स्वस्थ हैं।''

''इसका मतलब जुड़वा हैं ?''

माँ की आवाज में खुशी की उत्तेजना थी।

ईश्वर ने स्त्री को धरा पर भेजा ही सृजन के लिये। उसने स्त्री की मानसिकता ऐसी बनाई है कि सृजन हेतु वह कितने ही कष्टों को सानन्द झेलती है। कितने ही संतानें हों, वह असंतुष्ट रहती है। प्रसव की पीड़ा उसका सबसे बड़ा आनन्द है। कोख के बच्चे को अपने खून से सींचकर बड़ा करती है। जीवन-मृत्यु में झूलते हुए उसे जन्म देती है। आँचल से अमृत बहाकर उसका पोषण करती है। इस अनुभूति का सुख पुरुषों के भाग्य में नहीं।

आश्चर्य नहीं, उसे जुड़वा सुनकर जो खुशी हुई, आनन्द के उन क्षणों में बिलकुल भूल गई कि वह यहाँ क्यों आई थी। यह जाँच क्यों करवा रही है ?

उसे उस समय खुद का जीवन इतना सार्थक लगा कि मेल-फीमेल वाला

मुद्दा एक तरफ रह गया।

''क्यों दीदी ?''

''क्या ?''

''माँ एकदम चुप क्यों हो गई ?''

''अरे पगली, उसे अभी पता चला है कि हम जुड़वा हैं।''

''उसका अभी यह हाल है तो जब हम गोद में आएँगी तब तो खुशी के मारे पागल हो जाएगी।''

''तुम बहुत दूर का सोचने लगती हो छोटी।''

उधर डॉक्टर साहब के समझ में नहीं आया कि माँ एकाएक चुप क्यों हो गई। उन्होंने ऐसा कुछ बताया भी नहीं था कि उसे सदमा लगता।

इधर माँ सोच रही थी कि क्यों न इन सु:खद क्षणों को वह थोड़ा और लम्बा खींच ले। जब पता चलेगा, तब की तब देखी जाएगी।

डॉक्टर साहब को भावनाओं में बहने का समय नहीं था। उन्होंने सिस्टर से कहा – ''इन्हें बाहर भेजो और अगले मरीज को अंदर लो।''

''और हाँ, मुझे जरा वह तौलिया देना, मैं हाथ धो लूँ।''

डॉक्टर साहब वॉश बेसिन की तरफ हाथ धोने को चले गए। सिस्टर ने खूँटी से टॉवेल उतारा।

''यहाँ जन्म से पहले भ्रूण का लिंग.....'' वाला बोर्ड फिर से दिखने

लगा।

•••

सर आपका काफी नाम होने लगा है।

इसके पीछे बहुत मेहनत है सिस्टर। पहले तो कुछ समझ में नहीं आता था। अब ज्यादा दिमाग नहीं लगाना पड़ता। रूटीन हो गया है।

और हमारे पास तरह-तरह के प्रोब हैं। सोनोग्राफी में सिस्टर हर काम के लिये अलग फ्रीक्वेन्सी का प्रोब होता है।

मैं तो सोचता हूँ भले अपने दो पैसे ज्यादा खर्च हों लेकिन मरीज के हित मे कोई कॉम्प्रोमाईज नहीं होना चाहिये। मुझे तो अच्छे से अच्छा सामान और किताबों के खरीदने के अलावा और कोई भी शौक नहीं सिस्टर।''

•••

छोटी ये डॉक्टर अंकल कितनी अच्छी बातें कर रहे हैं। मरीजों के हित की सोच, अच्छे सामान व किताबों का शौक - लगता है भले इन्सान हैं।

दीदी फिर पापा कल इनके लिये कल गंदी गंदी बातें क्यों कर रहे थे, कि ये बिकाऊ हैं, इन्हें पैसे देकर कोई भी काम करवाया जा सकता है वगैरह-वगैरह। समझ में तो मेरी भी नहीं आता छोटी, कि डॉक्टर से क्या बुरा काम करवाया जा सकता है ? ये तो जीवनदाता हैं। भगवान तो दिखता नहीं। ये दिखने वाले भगवान हैं।

इन्हें अच्छे काम के प्रति रुझान था इसीलिये तो ये लोग डॉक्टर बने। छोटी, पैसा ही कमाना होता तो ये डॉक्टर क्यों बनते। पैसा कमाने के लिये तो ढेर आसान रास्ते हैं। उसके लिये इतना पढ़ने-लिखने व मेहनत करने की क्या जरूरत। आठवीं पास करो और कोई भी व्यवसाय शुरू कर दो। जब तक ये लोग एम.बी.बी.एस., एम.एस. इत्यादि करते हैं तब तक तो ये बिजनेस में पन्द्रह बरस आगे बढ़ चुके होते हैं।

''मैं नहीं मानती कि ये लोग बिजनेस करते होंगे।''

बड़ी ने आत्मविश्वास के साथ कहा।

•••

मोल भाव ...

''आपने भेंट का लिफाफा लाया हो तो जमा कर दीजिये।''

''देख लीजिये पूरे चौदह सौ हैं।''

पापा ने रिसेप्शनिस्ट को लिफाफा दिया।

दीदी यह कैसी भेंट है कि कोई अपने मुँह से मांग कर जमा करवा रहा है और देने वाला बता भी रहा है कि उसने कितना दिया।

''आईये साहब जी, बैठिये''।

क्या कहा डॉक्टर साहब ने ?

उन्होंने कहा रिपोर्ट आपके पास शुक्रवार तक भिजवा देंगे। पापा ने बताया।

''ओहो – तब तो आपके लिये खबर बुरी है।'' – डॉक्टर बोले।

लेकिन अभी तो रिपोर्ट मिली नहीं, आपकी उनसे कुछ बात हुई क्या ?

''छोड़िये भी, उससे आपको क्या करना''।

आपका काम हो जाएगा। लेकिन जरा दिक्कत वाला मामला है क्योंकि एक तो दिन ज्यादा हो चुके हैं और दूसरी बात काम भी डबल है।

''हूँ'' पापा की आवाज

''फिर भी कितना लग जाएगा ?''

''दवाईयों सहित कम से कम दस से बारह हजार''

''परन्तु साहब यह तो बहुत ज्यादा है'' – पापा बोले।

''देखिये साहब मैं तो आपके घर आपको बुलाने गया नहीं था।''

हम गलत काम नहीं करते। हमारे नर्सिंग होम की अच्छी रेपुटेशन सुनकर ही आप हमारे यहाँ आए होंगे। फिर आप संतुष्ट होंगे तो बाकी लोगों को भी भेजेंगे। देखिए, साहब यह टीम वर्क होता है। सोनोग्राफी करने वाला, बेहोशी देने वाला, डॉक्टर, असिस्टेंट, आपरेशन थियेटर, कमरा किराया और निपटने के बाद उसकी आगे की व्यवस्था करना। सभी खर्चे अलग अलग जोड़ने बैठें तो यह रकम आपको ज्यादा नहीं लगेगी।

फिर डॉक्टर ने लम्बी साँस भरते हुए कहा – थियेटर।

''समय भी खराब आ गया है। ये सरकारी लोग और टी.व्ही. चैनल वाले सब पीछे पड़े रहते हैं। इनका मुँह भी बंद रखना पड़ता है।''

''आप यह समझिये कि आपके साथ गलत नहीं होगा।''

''जी, सोचकर बताता हूँ'' – पापा।

''सोचने में ज्यादा वक्त मत लगाइये नहीं तो खतरा बढ़ता जाएगा और ऑपरेशन की नौबत भी आ सकती है।'' – डॉक्टर।

•••

दीदी, मेरे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा कि ये लोग किस खतरे की बात कर रहे हैं। डॉक्टर अंकल पापा को किस बात का भरोसा दे रहे हैं, कि आपके साथ गलत नहीं होगा। ये लोग ऐसा कौन सा काम करना चाहते हैं जिसके लिये इतने बड़े टीम वर्क की जरूरत है। ये क्या निपटाना चाहते हैं, जिसके बाद की व्यवस्था के बारे में बात की जा रही है।

''कुछ नहीं छोटी। तू ज्यादा ध्यान मत दे। बड़ों की बातें सुननी भी नहीं चाहिये। चलो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाती हूँ।''

नहीं दीदी तुम मुझसे कुछ छुपा रही हो।

अब मैं इसे कैसे बताऊँ कि मैं इससे क्या छुपा रही हूँ। इधर कुछ दिनों से मुझे घर का वातावरण कुछ अजीब सा लग रहा है।

दीदी, नानी और सब तो बड़े खुश हैं, पर माँ, पिताजी आपस में बात क्यों नहीं कर रहे। माँ गुमसुम रहती है। हमें पेट भर खाना भी नहीं मिल रहा। चुपचाप

कोने में बैठकर दबे छुपे रोती रहती है। कई बार तो रात को भी माँ की सिसकियों से हमारी नींद खुल जाती है। पिताजी भी जगे मिलते हैं।

माँ पिताजी दोनों एक दूसरे के सामने सोने का नाटक करते हैं। कभी कभी एक दूसरे से लिपट कर रोते हैं। पिताजी माँ के सिर को सहला कर कहते हैं – सब ठीक हो जाएगा। इतना सब अच्छा तो चल रहा है। बिगड़ा क्या है जो ठीक हो जाएगा ? मेरा मन किसी आशंका से काँप रहा है जिसे मैं अपने आप से भी व्यक्त करने में डर रही हूँ।

मुझे दूर से एक तूफान साफ–साफ आता दिख रहा है जो मुझे और छोटी को उड़ा ले जाएगा।

बगल में हलचल बंद हो गई थी। छोटी आजकल बहुत चंचल हो गई है। देखा तो मेरे पैर पर सिर टिका कर सो गई थी। अबोध होना सबसे बड़ी नेमत है। समझ आते ही दु:ख शुरू हो जाते हैं। छोटी को वह तूफान दिख ही नहीं रहा, तो उसे चिन्ता किस बात की !

•••

फैसला ...

''सुनो जी यह करना क्या जरूरी है ?'' – माँ ने पूछा।

''अच्छा तो मुझे भी नहीं लग रहा लेकिन इस छोटी सी नौकरी में हम इतने खर्चे कैसे झेल पाएँगे ? और वह भी एक नहीं दो के!''

''देखो जी कोई आता है तो अपनी किस्मत लेकर आता है, हम कौन होते हैं उसे पालने वाले ? दाना पहले होता है, चिड़िया बाद में आती है। याद है, मुनिया जब अंदर थी तभी तुम्हें प्रमोशन मिल गया था।'' – माँ

''हाँ वो तो ठीक है पर यह भी तो सोचो कि लोग क्या कहेंगे ?'' – पापा

''कैसी बात करते हो जी, लोगों को छोड़ो, हम अपने आप को क्या जवाब देंगे ? और फिर लोक लाज के लिये हम अपने बच्चों को मार डालें ? और.....''

मेरे ऊपर आसमान गिरा आगे का कुछ भी सुनना बंद हो गया। तो यह था तूफान जिसकी चेतावनी मेरी छठी इन्द्रिय दे रही थी।

नहीं, यह नहीं हो सकता, शायद मैं कुछ गलत सुन रही हूँ।

मैं आपकी गुड़िया हूँ पापा। आप पर बोझ नहीं बनूँगी। आधा पेट रह लूँगी। मैं तो आपके यहाँ मेहमान बन कर आ रही हूँ। जब तक रहूँगी आपकी बगिया महकाऊँगी।

दीदी की किताबों से पढ़ लूँगी। उसका बचा डिब्बा खा लूँगी। मुझे जाना तो वैसे भी है। बाबुल का आँगन तो देर सबेर सभी का छूटता है। पर मुझे हल्दी लगाकर, शहनाईयों की गूँज में, दूल्हे राजा के साथ विदा करो पापा। शादी न हो तो भी कोई बात नहीं....।

परन्तु यह कैसी विदाई पापा ?

माँ–पिताजी को करवट बदलते बदलते पता न चला कब सुबह हो गई। दोनों की समझ में नहीं आ रहा था क्या किया जाए। व्यावहारिकता जो कह रही थी उसे आत्मा गवारा नहीं कर रही थी।

हम उस कठघरे में खड़े थे जिसे जज साहब के फैसले का इंतजार था। फैसला भी अजीब। या तो मौत या जिन्दगी। मैं मौत की सजा नहीं कहूँगी क्योंकि मैंने कोई अपराध तो किया नहीं।

कहते हैं ना कि आप कुछ अच्छा करो तो अच्छाई बच्चों को भी मिलती है, और आप कोई अपराध करो तो उसकी सजा आपके बच्चों को भी मिलती है।

इसका इससे अच्छा उदाहरण क्या हो सकता है।

हालाँकि हमारे माँ–बाप ने भी कोई अपराध नहीं किया, इसे हम एक गलत कदम भर कह सकते हैं। हाँ वे जो अब करेंगे वह जरूर अपराध की श्रेणी

में आएगा।

परन्तु बेटी और पापा का जो रिश्ता होता है, उसकी गहराई इतनी ज्यादा होती है कि मैं ईश्वर से मनाऊँगी कि मेरे पापा जो कर रहे हैं वह एक सामाजिक दबाव व परिस्थिति जन्य है। उन्हें क्षमा कर दो।

''जरा एक कप चाय बनाना।''

''अरे आपने डब्बा तो खाया ही नहीं।''

हमें पापा के भूखे रहने पर बहुत दुख हुआ। कैसी होती है यह बेटी की माया।

''मन नहीं लग रहा था खाना खाया नहीं गया।''

''एडवांस के लिये अर्जी दे आया हूँ। दस-बारह हजार बोल रहे हैं तो न दिखने वाले खर्चे मिला कर चौदह-पन्द्रह लग ही जाएँगे।''

माँ समझ गई। कुछ फैसले बिना बोले हो जाते हैं। जब किसी लड़की के साथ आप चार पाँच साल से घूम रहे हों तब उसे आई लव यू नहीं बोलना पड़ता।

''क्यों दीदी, पापा पैसे क्यों निकलवा रहे हैं ? क्या हम कहीं घूमने जा रहे हैं ?''

''हाँ छोटी एक बहुत लम्बे सफर पर।''

•••

विसंगति ...

माँ ने दरवाजा खोला।

''आंटी जी आज नेहा को हमारे यहाँ नवमी के कन्या भोज पर भेज दीजियेगा, कल नव दुर्गा खत्म हो रहे हैं।''

''हाँ बेटा मालूम है, तुम्हारे यहाँ तो सभी लोग नौ दिन व्रत रखते हैं ना।''

''आप भी नेहा के साथ आइये ।''

नेहा दीदी के साथ माँ और हम लोग भी पहुँचे।

माँ ने नेहा से कहा ''थोड़ा सम्भल कर खाना, वो सक्सेना जी और पांडे जी के यहाँ भी तुम्हें बुलाया है।''

माँ लोग हमारी पूजा क्यों करते हैं ?

बेटी कन्या लक्ष्मी का रूप होती है। देवी तो दिखती नहीं इसलिये कन्याओं को ही उसका रूप मानकर उनकी पूजा करते हैं।

देवी के कई रूप होते हैं। बुद्धि की देवी सरस्वती, पैसे देने वाली लक्ष्मी और शक्ति का रूप दुर्गा।

क्यों माँ आजकल कन्याओं का शॉर्टेज है क्या, हमें बुलाने वाले ज्यादा और कन्याएँ कम दिख रही हैं।

अब माँ उसको क्या समझाए कन्याओं के कम होने का कारण। अंदर की दो तो वह स्वयं ही निपटाने जा रही है।

नेहा थोड़ी बड़ी हो गई थी। अब अखबार पढ़ने लगी थी। टी.व्ही. के बड़ों के कार्यक्रम और समाचार भी समझ में आने लगे थे। उसने पूछा माँ यह सब कब बदलेगा – एक तरफ लोग कन्याओं की पूजा करते हैं, तो दूसरी तरफ उन्हें ठीक से खाने पीने नहीं देते, स्कूल नहीं भेजते, उनके पैदा होने पर सबके चेहरे उतर जाते हैं। ऐसा क्यों माँ ?

क्यों दीदी ये नेहा दीदी क्या क्या कह रही है। मैंने तो पहले ही तुमसे कहा था कि कहीं यूरोप, अमेरिका में जन्म लेते हैं। जहाँ हमारे और लड़कों के अधिकार समान हैं। एक तो तुमने पहली गलती यह करी कि एक लाख छियासी हजार योनियों की च्वाइस में इन्सान की कोख चुनी और चुनी भी तो इस देश को चुना, इस देश को चुना भी तो मेट्रो शहर में आने का।

अरे, किसी आदिवासी की कोख में हम होते तो बड़े होते ही लड़के हमारे चक्कर लगाते, उनसे प्रतियोगिताएँ होती। शादी के लिये हम उनमें से किसी वीर को चुनते। न कि वे हमें। शादी के बाद बाजार जाते तो सामान लेकर वो अपने

पीछे पीछे चलता।

पर छोटी यह आर्यावर्त कहलाता है जहाँ नारियों की पूजा होती है।

यहीं तो मात खा गए दीदी। हमने तो यह सोचा ही नहीं कि नारी उत्थान की बात तभी होगी जब वह गिरी हुई होगी। जो उठा हुआ है, उसे उठाने की क्या जरूरत। ये लोग नारियों की पूजा पर इसलिये जोर देते हैं ताकि लोग धर्म के रूप से ही सही उन्हें प्रताड़ित करना छोड़ दें। ये लोग हरिजनों को हरिजन बनाए रखना चाहते हैं इसीलिये ये उनके लिये आरक्षण है। जिस दिन आरक्षण खत्म उस दिन हरिजन खत्म लेकिन ऐसा होगा नहीं, क्योंकि ये लोग हरिजनों को अपनी बगल में बैठाना ही नहीं चाहते।

हम धोखा खा गए दीदी, यह सबसे ज्यादा आडम्बरियों का देश है। इनमें सच्चाई बिल्कुल नहीं। अंदर कुछ और है और अपने आप को प्रदर्शित कुछ और करते हैं।

एक तरफ कन्याओं की पूजा करेंगे तो दूसरी तरफ उन्हें मार मार कर जमीन में गाड़ेंगे। एक तरफ गऊ को माता मानेंगे तो दूसरी तरफ उसके बछड़े का दूध छीनकर खुद पिएंगे। बकरे की पूजा करेंगे और उसकी बली देंगे। विधवा को आग में झोंकेंगे और सती माँ कहकर उसकी पूजा करेंगे। अरे दीदी कहाँ फंस गए हम इस देश में।

•••

दहेज ...

सुनो गुड़िया के लिये आगरा वाले, यहाँ आने का समय माँग रहे हैं। माँ ने पापा से पूछा।

''हम तो लड़की वाले हैं। उन्हीं की सुविधा पूछो।'' पापा ने कहा।

''ठीक है।''

•••

दीदी, बुआ की शादी कब होगी ?

अरे छोटी, अभी उन्हें गुड़िया को पसंद तो करने दो, फिर कुछ बातचीत होगी, फिर तारीख तय होगी।

''पापा उनसे दहेज में कितने पैसे माँगेंगे दीदी ?''

''अरे पगली दहेज तो लड़की वाले लड़के वालों को देते हैं।''

''बुआ को तो वे ले जाएँगे फिर पैसे हम क्यों दें ?''

''अरे हम कोई बुआ को बेच थोड़े रहे हैं जो उनसे पैसे लें।''

''फिर वो हमसे पैसे क्यों ले रहे हैं ?''

''क्या पता छोटी।''

''मैं समझ गई दीदी।''

''क्या ?''

''बीस गुणित दो कितने ?''

''चालीस।''

''उसका तीस से गुणा करो –''

''बारह सौ।''

''उसका फिर से बारह से गुणा करो।''

''चौदह हजार चार सौ। परंतु यह क्या हिसाब है छोटी ?''

''अभी बताऊँगी दीदी।''

''उसमें चालीस का गुणा करो। कितना होता है ?''

''पाँच लाख छिहत्तर हजार छोटी।''

''अब बताओ भी छोटी। मेरे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।''

''यही तो बात है। हाथ, पैर पहले क्या हिले, तुम दीदी बन बैठीं। दिमाग तो पहले यहाँ हिला था।''

''तू बहुत बदतमीज हो गई है छोटी''

''सॉरी दीदी।''

''तुम इतना छोटा हिसाब नहीं समझ पाईं, दीदी ?''

''मैं अभी भी नहीं समझी छोटी।''

''उन्होंने दहेज कितना माँगा ?''

''पाँच लाख - क्यों।''

''अरे दीदी उन्होंने बुआ के खाने के पैसे जोड़ लिये।''

''एक टाईम का खाना 20 रुपये का। ऐसे दो टाईम, तीस दिन, बारह महीने और चालीस साल।''

''बीच बीच में वो मायके आएगी और बीमार पड़ेगी तो कम खाएगी। इसलिये ऊपर के छियत्तर हजार छोड़ दिये।''

''क्यों न हम उनसे कहें कि दहेज मत लो, बुआ के लिये हम सुबह शाम डब्बा भिजवा दिया करेंगे।''

''है ना आसान।''

•••

स्त्री विहीनता ...

''दीदी आज गुमसुम क्यों हो''

''कुछ अच्छा नहीं लग रहा''

क्यों ?

तुमने कभी सोचा छोटी, जिस दुनिया को देखने के लिये हम इतना आतुर हैं वहाँ हमारे लिये क्या इंतजार कर रहा है ? बचपन में लड़कों से भेदभाव, बचा खुचा खाओ, शिक्षा में लड़कों को प्राथमिकता, इलाज में लड़कों को प्राथमिकता, और ससुराल भेजने के लिये सजा धजा कर बाजार में खड़ी कर दी जाओगी। वहाँ जमकर सास की और आदमी की प्रताड़ना पूरा सेकंड ग्रेड सिटिजन के जैसा व्यवहार, मार पीट, माँ-बाप ने ठीक से दहेज नहीं दिया तो मारने, जलाने या छोड़ देने की धमकियाँ, उनके च्वाइस के बच्चे नहीं हो तो दूसरी बीबी लाने की धमकी और पता नहीं क्या क्या ?

गनीमत है आजकल सती प्रथा खत्म हो गई है, नहीं तो उस भयानक अंत के लिये भी तैयार रहो।

क्या करेगी छोटी ऐसी दुनिया में जाकर पैदा होकर।

रोज मरने से तो अच्छा है एक ही बार में निपट जाओ।

दीदी तुम बहुत नकारात्मक बातें कर रही हो, समय बदल रहा है। जो जो तुमने कहा वह अतिरेक है, ऐसा कुछ नहीं। बच्चियाँ पढ़ रही हैं। उन्हें खाने-पीने को पूरा मिल रहा है। हर क्षेत्र में महिलाएँ आगे बढ़ रही हैं। सरकार की ओर से भी खूब प्रोत्साहन मिल रहा है।

और तुम यह भी तो सोचो दीदी हमारे बिना यह दुनिया कितनी फीकी हो जाएगी। बाजार से सारे रंग उठ जाएँगे क्योंकि लड़के तो सफेद, ग्रे, ब्राउन या काला ही पहनते हैं।

कपड़ा व्यापारियों की लाई लुट जाएगी क्योंकि जरूरत रहती है एक मीटर की और हम खरिदवाती हैं पाँच मीटर। जरूरत रहती है दो जोड़ी कपड़ों की और हर औरत के पास मिलेंगी कम से कम साठ-सत्तर साड़ियाँ। बाजार में सलमा सितारों वाले झिलमिलाते कपड़ों की जगह पट्टे की चड्डियाँ, बनियान व सफेद धोती-कुर्ते टंगे नजर आएँगे।

सराफा उठ जाएगा, गहने कौन खरीदेगा।

अच्छा खाना नहीं मिलेगा, लोग दूध दलिया पीयेंगे और लौकी उबाल कर खाएँगे।

इनके सब सामान बिकने बंद हो जाएंगे क्योंकि, चाहे जूता हो या शेविंग क्रीम सभी तो लड़कियाँ एडवरटाइज करती हैं तब बिकती हैं।

सब अकर्मण्य हो जाएँगे क्योंकि औरतों की डिमांड को पूरा करने के लिये ही तो आदमी मर मर कर कमाता है।

दीदी की भी बोलने की इच्छा हुई, उसने कहा - ''हाँ छोटी तुम ठीक कह रही हो।''

देखो, ब्रह्मा ने पहले सृष्टि बनाई, थोड़ा आराम किया।

फिर पुरुष बनाकर थोड़ा आराम किया।

सबसे बाद में जब स्त्री बनाई तो उसके बाद न तो ब्रह्मा को आराम मिला और न ही पुरुष को।

पत्नी दो दिन मायके जाती है तो लगता है हटाओ यार कौन दाढ़ी बनाए। जब स्त्री जात ही नहीं रहेगी तो किसके लिये साफ-सुथरे रहोगे। किसके लिये परफ्यूम स्प्रे करोगे ? सब के सब सरसों का तेल लगाकर, बसाते घूमते फिरेंगे।

न कोई लड़ाई होगी ना झगड़े। सारे फसाद की जड़ तो हम ही हैं। अरे शूर्पणखा थी तो रामायण हुआ, द्रौपदी ने कहा अंधे का बेटा अंधा, तो महाभारत हुआ, हेलन थी तो ट्राय का महायुद्ध हुआ। हम ना होंगे तो ये लोग करेंगे क्या ?

जरा सोचो, हवाई सुंदरियों की जगह यदि कोई मुस्टंडा आपका स्वागत करे और कहे ''जा बैठ, जहाँ जगह मिले वहाँ।'' आप कुछ स्वल्पाहार की उम्मीद लगाए बैठे हों और वह कहे - ''क्यों बे, घर से भूखा-नंगा आया है

क्या ? घंटे भर में तो पहुँच जाएगा, क्यों मरा जा रहा है खाने के लिये।'' आधे रास्ते में ही, आपको लगेगा कूद पड़ो हवाई जहाज से नीचे।

और हाँ यदि भारतीय रेल इन खडूस टी.टी. के बदले रेल सुंदरियाँ नियुक्त करे तो बिना टिकट यात्रा की समस्या वैसे ही हल हो जायेगी। कोई नहीं चाहेगा कि किसी सुंदरी के सामने उसकी बेइज्जती हो।

मोबाईल कंपनियाँ बंद पड़ जाएँगी। किससे चेटिंग करोगे, किसको एस.एम.एस. करोगे। रूठेगा कौन ? मनाओगे किसको ?

सात समन्दर पार से, गुड़ियों के बाजार से, एक अच्छी सी गुड़िया लाना।
चाहे गुड़िया न लाना, पापा जल्दी घर आना।

– यह बेटी ही कहती है, बेटा कभी नहीं।

पत्नी कभी बेटी बनती है तो कभी माँ। कभी बहन तो कभी आपकी बेस्ट फ्रेन्ड। यह रूपान्तरण सिर्फ औरतों में ही सम्भव है। आप कभी अपनी पत्नी के बाप या भाई की जगह नहीं ले सकते। यह सामर्थ्य पुरुष जाति में नहीं।

स्त्री ईश्वर की अनुपम रचना है।

पुरुषों में जब ममत्व, दया, सहिष्णुता जैसे स्त्रीत्व के गुण आते हैं तो वे गौतम बुद्ध, यीशु या बाबा आमटे बन जाते हैं। पूजनीय हो जाते हैं।

स्त्रियों में जब पुरुषोचित मक्कारी, क्रूरता और उच्छृंखलता आती है तब वह क्या बनेगी इसकी आप कल्पना कर सकते हैं।

छोटी, आखिर तुमने मुझे हँसा ही दिया। एक सांस में बोले चली जा रही हो। अरे पगली, लड़कियाँ नहीं रहेंगी तो नाते-रिश्ते क्या, यह दुनिया ही खत्म हो जाएगी। ये लोग तो कालिदास की तरह उसी डाल को काट रहे हैं जिस पर बैठे हैं।

•••

खुद की पहचान ...

पूरा परिवार शाम को चिड़ियाघर देखने गया। नेहा बहुत खुश हुई। वह गाईड से उचक उचक कर खूब सवाल कर रही थी। उसने नेहा को जानवारों की खूब जानकारी दी।

हमेशा की तरह छोटी बेचैन हुई और दीदी से उसके सवाल शुरु हो गए।

''क्यों दीदी ?''

''अब क्या पूछेगी ?''

''मोर नाच-नाच कर मोरनी को इम्प्रेस करना चाहता है। मेंढक गला फाड़-फाड़ कर मेंढकी के लिये टर्राता है। एक रानी मधुमक्खी के सामने हजारों नर हाथ जोड़े खड़े रहते हैं, जबकि हर जानवर में नर ज्यादा सुंदर है, चाहे वह शेर हो, मोर हो या तोता।

इन्सानों में मादा ज्यादा सुंदर है।

हम खुद के महत्व को कब समझ पाएँगे दीदी ?''

•••

आश्चर्य ...

पापा अखबार पढ़ रहे थे। वह माँ से बोले ''सुनो - यह न्यूज देखी ? अभी जनगणना में सबसे ज्यादा मेल-फीमेल की विसंगति दिल्ली के साउथ एक्सटेंशन में पाई गई। दिल्ली हमारी राजधानी और राजधानी के सबसे पॉश एरिया में जहाँ सबसे ज्यादा पढ़े-लिखे रहते हैं, जहाँ वे लोग हैं जो देश की नीतियाँ बनाते हैं, वहाँ बच्चियाँ कम हो रही हैं। हम क्या रोना रोएँ पंजाब और हरियाणा के सुदूर गाँवों का। यदि वे अनपढ़ लोग रूढ़िवाद में जकड़े हैं तो क्या आश्चर्य। वहाँ एक कलेक्टर ने वालेण्टियर्स की एक टीम बनाई है जो महिला के गर्भवती होते ही उसके पीछे लग जाते हैं। वह किस डॉक्टर के पास जाती है, कहाँ सोनोग्राफी करवाती है, उसे कुछ पता चलता है कि नहीं, उसके बाद वह कहीं गायब तो नहीं होती ? क्योंकि औरतें एबार्शन करवाने मायके या इधर-उधर रिश्तेदारों के यहाँ भी चली जाती हैं।''

''दीदी''

पता नहीं अब यह क्या पूछेगी। दीदी ने मन ही मन में सोचा।

''हाँ बोल।''

''एक बात समझ में नहीं आई। मैंने सुना है कि ये लोग खुद के बचाव के लिये बॉडीगार्ड रखते हैं ताकि कोई इन्हें मार न सके। बड़े-बड़े लोगों के लिये जेड क्लास सेक्युरिटी भी होती है। यानी कि एक पूरी की पूरी टीम। परन्तु यहाँ आप के बच्चे को आप ही से बचाने के लिये सरकार एक टीम नियुक्त करे यह बात पचती नहीं। ऐसा क्यों दीदी ?''

पता नहीं....

•••

कब लड़का ? कब लड़की ? ...

''छोटी, उठ, टी.व्ही. पर अच्छा प्रोग्राम आ रहा है।''

''क्या है दीदी, मुझे सोने दो दीदी कल माँ देर रात तक पिक्चर देखती रही। ये लोग कब समझेंगे कि हम इससे डिस्टर्ब होते हैं।''

''लेकिन अभी तो प्रोग्राम अपने बारे में आ रहा है।''

''डिस्कवरी पर हो तो बताओ। बाकी चैनल्स में अपने को रुचि नहीं।'' - छोटी बोली।

आश्चर्य न करें कि बच्चे इतने होशियार होते जा रहे हैं कि बाहर निकलने से पहले ही उनके पास चैनल्स की च्वाईस रहेगी। आज की तारीख में दो साल का बच्चा भी रिमोट कंट्रोल समझ लेता है और अपने मन का चैनल लगा लेता है।

''हाँ छोटी डिस्कवरी ही लगा है। उसमें बता रहे हैं, बच्चे कैसे होते हैं, कब लड़का होता है, कब लड़की होती है इत्यादि।''

यह बड़ी हैरानी की बात है कि अस्सी मौकों में सिर्फ एक ही मौका ऐसा होता है जब डिंब व शुक्राणु का युग्म होता है। यह एक अत्यधिक रोचक घटना

है। हजारों शुक्राणु कोशिश करते हैं पर सफलता सिर्फ एक ही को मिलती है। और उसके तुरन्त बाद दरवाजे बंद हो जाते हैं।

यह घटना अंतरिक्ष के किसी बिग बैंग से कम अद्‌भुत नहीं।

अब उस नव निर्मित कण के पास सिर्फ हफ्ते भर का भोजन होता है, जिसके दम पर उसे ट्यूब से बच्चेदानी तक के लम्बे सफर पर जाता है। शुक्राणु के पास खुराक नहीं रहती। हमारे पहले सफर का टिफिन भी हमें डिम्ब के रूप में स्त्री ही देती है। यदि रास्ते में खाना खत्म तो वह भी खत्म। वहाँ पहुँच कर उसे उस नर्म धरातल में धंस जाना है जहाँ से उसे आगे का आहार माता के खून से मिलेगा। यदि ये साहब पहुँच भी गए और इनके स्वागत की तैयारियाँ पूरी नहीं हो पाईं तो फिर खेल खत्म।

''मजा आ रहा है ना छोटी ?''

''क्यों दीदी क्या हम भी इतनी मुश्किलों से गुजरे होंगे।''

''और क्या! ''

डिम्ब में एक्स और एक्स क्रोमोसम होते हैं।

शुक्राणु में एक्स और वाय।

यदि एक्स से एक्स मिलता है तो बच्ची व यदि एक्स से वाय का मिलन हो तो लड़का निर्मित होता है।

''क्यों दीदी, इसका मतलब लड़का होना या लड़की होना माँ के हाथ में बिल्कुल नहीं। यदि पापा का वाय कमजोर तो लड़की यदि पापा का एक्स कमजोर

तो लड़का है ना ?''

''तू बड़ी गहरी बात बोलती है छोटी।''

''और यदि पापा का एक्स और वाय दोनों गड़बड़ हो तो ? दीदी ने छोटी को छेड़ा।''

''क्या पता दीदी।''

''यही तो विडम्बना है छोटी। तब भी दोष माँ पर ही आता है। सब यही कहेंगे माँ की कोख नहीं भरी। वह बाँझ है। पिता को कभी कोई बाँझ नहीं कहता। पुरुष स्वयं की जाँच करवाने में भी बेइज्जती महसूस करता है। कई बार खुद की जाँच करवाए बिना दूसरी और तीसरी शादी भी कर लेता है।''

''लोगों को इसकी समझ कब आएगी दीदी ?''

क्या पता.....

•••

विवाह संस्कार ...

बुआ की शादी जल्दी तय हो गई।

''छोटी, हम बुआ की शादी अटेंड नहीं कर पाएँगी।''

''कोई बात नहीं दीदी, रोशनियों का मजा नहीं ले पाएँगे, बाकी पटाखे, बैंड बाजे, लोगों की गप्पें सब तो सुनाई देगा।''

''बेचारे अंधे लोग तो जिन्दगी भर ऐसे ही शादी अटेंड करते होंगे।''

''तू बात बड़ी गहरी बोलती है, छोटी।''

दिन भर मेहमानों का आना, तैयारियाँ वगैरह होती रही। शाम को बारात का धूमधाम से स्वागत किया गया।

वरमाला का कार्यक्रम हुआ और दूल्हे-दुल्हन को सोफा पर बैठा दिया गया।

रात को डेढ़ बजे फेरों का मुहूर्त था।

''दीदी मुझे तो नींद आ रही है। देखो रात के साढ़े ग्यारह बज रहे हैं।''

''पर असली रस्में तो अभी बाकी हैं।''

''अच्छा, मुझे घंटे भर बाद जगा देना।''

पंडितजी की आवाज से नींद खुली । परिवार वालों के बीच फेरे लगना शुरू हुए। पंडितजी मंत्र बोलते जा रहे थे और दूल्हा-दुल्हन ऊँघते हुए फेरे ले रहे थे। अधिकतर लोग लम्बी-लम्बी जम्हाईयाँ लेते हुए जगे रहने का भरकस प्रयास कर रहे थे। सब लिहाज में बैठे थे, अन्यथा कबके जा कर सो जाते।

पंडितजी हर फेरे का महत्व बता रहे थे, जिसे कोई नहीं सुन रहा था।

पाणिग्रहण, अग्नि प्रदक्षिणा, सप्तप्रदा, लाजा होम आदि कार्यक्रम चल रहे थे। पंडित जी कह रहे थे।

जीवन के इस गम्भीरतम अवसर पर पाणिग्रहण करते हुए वर कहता है :

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदृष्टिर्यथा सः ।
भगो अर्यमा सविता पुरान्धिर्मध्यम त्वा दुर्गार्हपत्याय देवाः॥ (ऋग. 10/85/36)

अर्थात् ''सौभाग्य की समृद्धि के लिये मैं तुम्हारे हाथ को पकड़ता हूँ, जिससे हम दोनों पुण्य प्राप्त कर सकें। भग, अर्यमा और दानशील सवितृ देवता इन्हीं देवताओं ने प्रसाद रूप में तुम्हें गृहस्थ धर्म के पालन हेतु मुझे दिया है।''

वर-वधु एक दूसरे से प्रतिज्ञा करते हैं :

मम वृते ते हृदयं दधामि मम चित्त मनु चित्तं ते अस्तु

मम वा मे कमना सुषत्व प्रजा पतिष्ट्वा निपुनक्तु मध्दम्। (पारस्कर गुह्य सूत्र)

अर्थात् तुम्हारा हृदय मेरे व्रत के अनुकूल हो। तुम्हारा चित्त मेरे चित्त के अनुकूल हो। मेरे कथन को तुम चैन से एक मन होकर सुनो। भगवान प्रजापति तुमको मुझमें युक्त या अनुरक्त करें।

यतेद् हृदयं तव तदस्तु हृदयं मम।
यदिदं हृदयं मम तदस्तु हृदयं तव॥ (मन्त्र ब्रह्मण 1/3/9)

अर्थात् यह जो तुम्हारा हृदय है वह मेरा हृदय हो जाये। यह जो मेरा हृदय है वो तुम्हारा हृदय हो जाये।

लड़के के माँ-बाप का ध्यान इस तरफ था कि बारातियों का स्वागत ये लोग कैसे कर रहे हैं ? लड़की के माँ-बाप ईश्वर को मना रहे थे कि भगवान, इज्जत बचा ले, पार लगा दे।

बीच में एक लड़का चाय की ट्रे घुमा गया, जिसने अमृत का काम किया। सबमें जान फूँक दी। अंग्रेज भले हमें खोखला कर गए परन्तु दो ऐसी चीजें दे गए कि उससे सारा वसूल हो गया। एक तो चाय और दूसरा ''सॉरी।''

सुबह चार बजे सब सम्पन्न हुआ। लोगों को जगा कर बताया गया कि

रस्में पूरी हुईं।

''क्यों छोटी कैसी लगी शादी ?''

''दीदी इतनी अच्छी कि मेरी तो नींद ही उड़ गई।''

''सही बात है छोटी, भारतीय परम्परा की शादी की बात ही कुछ और है। उसमें जो संस्कार पड़ते हैं, वैसे किसी और परम्परा में नहीं। इसीलिये हमारे यहाँ यह बंधन अटूट होता है।''

तू चुप क्यों है छोटी ?

''दीदी एक बात समझ में नहीं आई। ये लोग शादी के नाम से पिछले बीस घंटों से जुटे हैं। इसमें इन्होंने छह घंटे एक दूसरे की आगवानी में, आठ घंटे खाने-पीने में, ढाई-तीन घंटे सजने-धजने और कपड़े बदलने में खर्च किये। बमुश्किल डेढ़- दो घंटे पंडितजी के साथ रहे और तब तक इतने थक चुके थे, कि उन्होंने क्या बोला, उस पर ध्यान ही नहीं दिया।

''जिस ज्ञान पर इनकी जिन्दगी का सुख, शान्ति निर्भर कर रही थी वह सुना ही नहीं।''

''यदि शादी-शुदा लोग भी इसे ढंग से सुनें तो उनकी जिन्दगी बदल जाए। जैसे कॉलेज से डिग्री डिप्लोमा लेने के बाद भी आदमी बीच बीच में सेमीनार अटेंड करते हैं उसी प्रकार ये शादियाँ एक सेमिनार की तरह होती हैं

जिससे शादी-शुदा लोग अपने किये हुए वादों का रिवीजन कर सकते हैं। उम्र के साथ समझ भी बढ़ती है। वे ध्यान से सुनें तो दूल्हा-दुल्हन के बजाय इन मंत्रों का अर्थ वे ज्यादा समझ सकते हैं और अपनी बची जिन्दगी सुधार सकते हैं।''

''जब पंडितजी पत्नी का महत्व बता रहे थे तब दूल्हा फुल स्पीड में सो रहा था। कितना दुर्भाग्य है दीदी।''

''तुमने बहुत पहले कहा था, परम्पराएँ तो बहुत अच्छी बनी हैं परन्तु इन लोगों ने उसका रूप पूरा का पूरा बदल दिया है इसलिये आज दुखी हैं।''

''और एक बात तो पूछना भूल ही गई दीदी -''

दीदी फिर घबड़ा गई।

''हाँ पूछ ही ले, हाँलाकि मालूम है जवाब तो दे पाऊँगी नहीं।''

''दीदी हमने हमेशा गुड़िया को पराया धन कहा, पापा ने हमेशा कहा, गुड़िया अपने घर चली जाये तो हमारी चिन्ता दूर हो, फिर यह कन्यादान की रस्म क्या है? अरे जो अपना था ही नहीं उसे दोगे कैसे ? जिसकी चीज उसे दे दी और कह रहे हो मैंने दान किया? वह तो तुम्हारे पास ऊपर वाले ने कुछ दिनों के लिये अमानत के तौर पर रखा था। कहाँ जाना यह पहले से तय था। बच्ची अपने घर चली गई और तुम कहते हो मैंने कन्या दान किया।

अरे, लड़की कोई गाय, बछिया है जो दान में दे रहे हो, लड़की कोई रुपया-पैसा है जो उसे दान में दे रहे हो ? अरे वो तो लक्ष्मी है, वह तो सरस्वती

है, वह तो चंडी है। उस शक्ति की उपासना करो मूर्खों, उसे क्या दान में दोगे ?''

''बस छोटी बस।''

•••

स्त्री का पद ...

इधर चिरकाल से स्त्री जाति का पद बराबर गिरता आया है। हमारे उत्तरकालीन दार्शनिक ग्रंथों तक में स्त्री को उपभोग की सामग्री की उपमा दी गई है।

महान कवि संत तुलसीदास जी तक ने स्त्री को ढोर, गवार, शूद्र व पशु के समकक्ष बिठा दिया।

वैदिक धारा का संदेश इस सम्बन्ध में बिल्कुल विपरीत है।

जाएदस्तम् (तहग 3/53/4)

अर्थात् पत्नी ही घर का सर्वस्व होती है। इसीलिये तो उसे बेटर हाफ कहते हैं।

''पुरुषो जायां वित्वा कृत्स्नतर मिवात्मानं'' (ऐतरेयाण्यक 1/3/5)

अर्थात् स्त्री के बिना पुरुष का व्यक्तित्व अधूरा है। पत्नी को पाकर ही उसमें पूर्णता आती है।

वैदिक ऋषियों में घोषा, विश्ववारा, लोपा मुद्रा जैसी ऋषिकाओं के भी नाम आते हैं। उपनिषदों में गार्गी जैसी ब्रह्मवादीनियों का उल्लेख मिलता है।

''महाभाष्य'' (लगभग ई.पू. 150) में मीमांक्षा जैसे विषयों को पढ़ने वाली स्त्रियों तथा पठन-पाठन में रत ''आचार्या'', ''उपाध्याया'' स्त्रियों का उल्लेख है।

संस्कृत भाषा का नियम है कि कई शब्दों के द्वंद्व समास में अभ्यर्हित (जो ज्यादा मान्य हो) वाची शब्द पहले आता है।

''माता पितरौ'' में माता शब्द इसीलिये पहले आता है। यही कारण है कि राधा-कृष्ण, सीता-राम, गौरी-शंकर आदि में स्त्रियों के नाम पहले आए हैं। वैदिक धारा में स्त्री का पद हमेशा ऊपर माना गया है। हमें वैदिक धारा की इस भावना को पुनजीर्वित करने की आवश्यकता है। सारी समस्या का समाधान अपनी संस्कृति में लौटना है।

•••

विरक्ति ...

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पूरष्णो न हन्यते हन्य माने शरीरे॥

यह आत्मा न कभी पैदा होती है, न ही कभी मरती है। यह शाश्वत व पुरातन है। शरीर का वध होने पर भी यह मरती नहीं।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णति नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

जिस प्रकार से मनुष्य पुराने वस्त्र अलग करके नये वस्त्र परिधान करता है, उसी प्रकार से आत्मा पुराना शरीर अलग करके नया शरीर धारण करती है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः॥

इस आत्मा को न शस्त्र मार सकते हैं, न आग जला सकती है, न इसे पानी गीला कर सकता है, न वायु सुखा सकती है।

''सुन रही हो छोटी ??''

''हाँ सुन भी रही हूँ और देख भी रही हूँ।''

''क्या ??''

''इधर दो दिनों से तुम अजीब सा व्यवहार कर रही हो। सो भी नहीं रही हो। तुम्हारी मजाक, खिलखिलाहट गायब है। गुमसुम पड़ी रहती हो। और आज यह गीता सुनाने की क्या सूझी ?''

''अभी तो हम पैदा नहीं हुए। इस हसीन दुनिया में पहला कदम भी नहीं रखा। उसके पहले यह विरक्ति की भाषा क्यों ?''

•••

वंश दीपक ...

''सुनो जी !''

''बोलो'' – पापा की आवाज।

''मुझे यह ठीक नहीं लग रहा। एक बार अम्मा से पूछ लें क्या ? हमने उन्हें अभी बताया भी नहीं।''

''उसे ना ही बताओ तो ठीक है। पुराने ख्यालात की हैं। पोते की रट लगाए बैठी हैं। उन्हें आर्थिक परिस्थिति से कोई मतलब नहीं। उनका एक ही ध्येय है – उनके सामने उनका वंश दीपक पैदा हो ताकि वे शान्ति से आँख बन्द कर सकें। लड़कियों से भी वंश आगे बढ़ता है, वे लोग मानते ही नहीं।''

•••

''दीदी ये वंश वृद्धि क्या होती है ?''

''छोटी हमारे जीवन की निरन्तरता बनी रहे ऐसा सभी की स्वाभाविक इच्छा होती है। उसको वंश का चलना कहते हैं। इन्सान सोचता है कि उसका

नाम आगे बढ़ाने वाला कोई हो।''

''नाम कैसा दीदी ?''

''मैं कुछ दिनों से जो अपने परिवार के बारे में सुन रही हूँ उसमें यही पाया कि इन लोगों ने पिछली कई पीढ़ियों से ऐसा कोई काम नहीं किया जो बताने लायक हो। ऐसा कोई महान व बड़ा काम हाथ में नहीं लिया जो इनके जीवन काल में पूरा नहीं हो पाया और जिसे आगे बढ़ाने के लिये उन्हें बच्चों की जरूरत महसूस हो। इस तरह के काम जिन्होंने किये जैसे मदर टेरेसा, विनोबा भावे या बाबा आमटे, उन्होंने शादी ही नहीं की, न ही बच्चे पैदा करने में समय गंवाया। उन्होंने पूरी दुनिया के बच्चों को अपने बच्चे माना। वैसे उनके आन्दोलन भी इतने बड़े थे कि उनके अपने एक, दो ओरिजिनल बच्चे होते भी तो उसे पूरा नहीं कर पाते – खैर।

हम तो अपने घर में वंश वृद्धि की परिभाषा व आवश्यकता इसी को समझते हैं कि उसके बाद कोई उसका नाम लिखने वाला बना रहे।

मजे की बात यह है कि श्राद्ध की पूजा के समय जब परदादा का नाम पूछा जाता है, तब लोग बगलें झाँकने लगते हैं।

यदि हम नाम को थोड़ा सा नजरअंदाज कर दें, तो क्या प्रियदर्शिनी श्रीमती गाँधी ने नेहरू जी का खानदान नहीं चलाया। उनकी जगह नेहरू जी को लड़का पैदा होता भी तो वह उनसे ज्यादा दुनिया में क्या उखाड़ लेता ?

सर्वोत्तम पुरुष भगवान श्रीकृष्ण हुए। उनका वंश उनके सामने खत्म हुआ।

रावण जैसे महाप्रतापी का वंश उसके सामने खत्म हुआ। ईश्वर की सत्ता के सामने किसी की नहीं चलती। टीपू सुलतान के वंशज आज कोलकाता में हाथ रिक्शा खींच रहे हैं।

न वंश को चलाना आपके हाथ में है, न ही वंश को टिकाना।

आपके हाथ में आज का सुनहरा वर्तमान है, आँख बंद करिये और जो जो आप अपने बच्चे से अपेक्षा करते हैं कि मेरा बच्चा ऐसे मेरा नाम रोशन करेगा, वैसा काम करेगा, वह आप खुद ही क्यों नहीं कर डालते। वह तो आपके हाथ में है।''

''छोटी तूने तो बड़ा लम्बा-चौड़ा लेक्चर दे डाला, पर ये लोग इसे समझें तब ना।''

•••

मुखाग्नि ...

एक और बात है जो मैं छोटी के सामने नहीं बोल सकती। इन लोगों को लगता है कि मुखाग्नि यदि लड़का दे तो मोक्ष प्राप्त होता है। उसका निवारण शास्त्रों में है कि आपका, भाई, दामाद, भतीजा कोई भी आपका दाह संस्कार कर सकता है। मरने के बाद क्या होता है क्या पता, लेकिन यह तो निश्चित है कि उन कन्याओं की हत्या का बोझ लेकर आप शान्ति से मर भी नहीं पाएँगे। उनकी चीखें आपके कानों में आखिरी समय में गूँजेंगी।

कौन-सा मौक्ष ?

कैसा मोक्ष ?

लाशों पर चलकर मोक्ष की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती....।

•••

वैराग्य ...

गीता बड़ा सुन्दर ग्रंथ है छोटी।

छोटी, जितनी जल्दी वैराग्य आ जाये उतनी जल्दी इन्सान सुखी हो जाता है। कइयों को बुढ़ापे तक भी परिपक्वता नहीं आ पाती। वे मृत्यु का भय जिन्दगी भर मन से निकाल नहीं पाते और जैसे जैसे मृत्यु पास आती है, उनका भय बढ़ता ही जाता है। होना उल्टा चाहिये, इतनी बड़ी जिन्दगी में समझ में आ जाना चाहिये कि मृत्यु एक शाश्वत सत्य है, चोला बदलना है। नये कपड़े को पहनने में तो खुशी होनी चाहिये ना ? और जीवन तो एक निरन्तर धारा है। योनियाँ उसके छोटे-छोटे पड़ाव हैं। किसी स्टेशन पर गाड़ी ज्यादा देर रुकेगी, किसी पर कम, पर सफर रुकेगा नहीं। आखरी पड़ाव या स्टेशन मोक्ष है।

अब छोटी हम दोनों को ही देखो। इतनी योनियों में घूमते-घूमते हम यहाँ पहुँचे। क्या फर्क पड़ता है, कि हम इनके 60-70 वर्ष मेहमान बनकर रहें या 60-70 महीने या 6-8 हफ्ते। सफर न जाने कितने हजार वर्षों का है। वह रुकने वाला नहीं। क्या फर्क पड़ता है, यदि यहाँ से गाड़ी बिफोर टाईम छूट जाती है ?

''दीदी मुझे तो डर लग रहा है, यह सब तुम क्यों कह रही हो ?''

•••

सामाजिक दबाव ...

''सुनो कल सुबह खाली पेट रहना।'' - पापा ने कहा।

डॉक्टर साहब ने कुछ खून की जाँचें लिखी हैं। वे करवानी हैं।

''रिपोर्ट कब तक मिलेगी ?''

''शाम तक, और हाँ लौटते में तुम रिक्शा कर लेना। मैं सीधे ऑफिस चला जाऊँगा।''

''जी''

यह जो हो रहा है वह ये लोग खुशी से नहीं कर रहे हैं। सामाजिक दबाव व परिस्थितिजन्य है। परन्तु एक बात बड़ी विचित्र है।

हम सभी मिलकर ही तो समाज बनाते हैं। समाज सुधारने का ठेका बहुत लोग लेते हैं परन्तु वह स्वयं सुधरना नहीं चाहते। एक राजा ने कहा कि रात को नये बने तालाब में हर व्यक्ति एक लोटा दूध डाल दे। दूसरे दिन तालाब पानी से भरा मिला। सभी ने सोचा कि सब तो दूध डालेंगे ही, क्या फर्क पड़ता है, मैं अकेले पानी डाल दूँ तो।

समाज सुधारने के लिये किसी आन्दोलन की जरूरत नहीं। जैसे मैं डाक्टरी छोड़कर यह किताब लिखने बैठ गया उसकी जरूरत नहीं। सिर्फ अपने हिस्से के लोटे में दूध ही भर कर डालें। दिक्कत यह हो रही है कि मैं सबको समझा रहा हूँ कि दूध डाला जाये और स्वयं पानी डाल रहा हूँ।

सामाजिक दबाव की बातें करेंगे और कन्याओं की हत्या करेंगे। दूसरी तरफ अपने लड़के की शादी में दहेज नहीं छोड़ेंगे। तब यह दलील देंगे कि हम कोई खुद के लिये थोड़े ही रख रहे हैं। मुन्ना का दहेज तो गुड़िया के घर जाएगा। उधर गुड़िया का ससुर कहेगा कि वह अपनी लड़की को पास ऑन कर देगा। अरे यह खेल बंद करो।

नहीं लेना मतलब नहीं लेना। नहीं देना मतलब नहीं देना। बात खत्म। गरीबी का रोना रोते जाएँगे। पैदा करते जाएँगे और मारते जाएँगे। अरे यदि सही में गरीब हो तो एक में रुक जाओ। परिवार नियोजन का आपरेशन ही करवा लो। जिस मध्यम वर्ग में सबसे ज्यादा कन्या भ्रूण हत्या हो रही है वह पढ़ा-लिखा है। कुछ लोग बड़ा सुन्दर फैसला कर रहे हैं। एक के बाद बंद चाहे लड़का हो या लड़की। और इस प्रकार के युगलों की संख्या बढ़ रही है।

यदि रूढ़िवाद में जकड़े हो तो सारी पढ़ाई-लिखाई जिसने आपको अंधविश्वासों के ऊपर नहीं उठाया बेकार है। गरीबी व अमीरी में वैसे भी दिक्कत नहीं, चाहे लड़का हो या लड़की। गरीब को एक काम करने वाली बिटिया मिलती है और अमीर के ऊपर कोई आर्थिक दबाव नहीं।

ये मध्यम वर्गीय लोग ना घर के ना घाट के।

''माँ जी, मैं जरा इनके साथ अस्पताल जा रही हूँ। आधे-पौन घंटे में वापिस आ जाऊँगी।''

''दीदी खूब भूख लग रही है। तीन-चार दिन से पेट भर खाने को नहीं मिला, और आज तो देखो दिन चढ़ आया लेकिन माँ ने चाय तक नहीं पी। और हम कहाँ जा रहे हैं। किस जाँच की बात हो रही है ? माँ की तबियत खराब है क्या ?''

''तू चिन्ता मत कर छोटी, माँ अभी आधे-पौन घंटे में कुछ खा लेगी।''

पापा ने बाईक को किक मारी और माँ उनके पीछे बैठ गई।

''हाँ चलो।''

''दीदी मुझे बाईक पर घूमना खूब अच्छा लगता है। जब पापा आफिस जाने के लिये तैयार होंगे तब मैं रोज सामने टंकी पर बैठकर उनको मुहल्ले का एक चक्कर लगाने के लिये कहूँगी। नहीं, सुबह बोलूँगी तो पापा ऑफिस के लिये लेट होंगे। शाम को ऑफिस से लौटेंगे तब बोलूँगी। तुम चुप क्यों हो ? तुमने क्यों नहीं कहा कि तुम भी मेरे साथ चलोगी।''

''हाँ छोटी, जहाँ भी तुम जाओगी मैं हमेशा तुम्हारे साथ ही रहूँगी। हम दोनों का नसीब साथ ही तो जुड़ा हुआ है।''

''दीदी आजकल तुम खूब दार्शनिक होती जा रही हो।''

मैं इसे क्या समझाऊँ कि बैठ ले छोटी और दो-चार बार पापा के साथ बाईक पर। उससे ज्यादा पापा के साथ घूमना अपनी किस्मत में नहीं।

पापा की आवाज से मेरी तन्द्रा टूटी ''तुम यहीं खड़ी रहो, मैं गाड़ी स्टैंड पर लगाकर आया।''

''जी''

''या ऐसा करो तुम वेटिंग रूम में चलो, मैं आता हूँ।''

''जी''

•••

और पता चल गया ...

बाहर खूब धूप चढ़ आई थी।

वेटिंग रूम की ठंडक अच्छी लगी।

''कौन सा महीना चल रहा है ?'' माँ के बगल में बैठी औरत ने पूछा।

''चौथा।''

''तो अभी से आप खून, पेशाब की जाँच करवाने क्यों आ गईं ?''

सामान्यतया डॉक्टर लोग पाँचवे माह के बाद बुलाते हैं।

''जी, लेकिन....''

''ओह मैं समझ गई।''

''पहली बार एबार्शन करवा रही हो क्या ?''

मैंने देखा – छोटी का चेहरा फक्क पड़ गया। उसने मेरी तरफ देखा, मैं उससे आँखें न मिला सकी।

उस औरत ने मेरी समस्या कुछ हद तक हल कर दी थी।

छोटी को समझ में आ गया था, मुझे उसे अब सम्हालना भर था।

''चिन्ता न करो बहन, सब ठीक हो जाएगा। यहाँ के सब लोग इसमें एक्सपर्ट हैं। मैं भी पिछले साल यहीं से करवा कर गई। अब ये बच्चा हम लोग सोच रहे हैं कन्टीन्यू करें।''

''बच्चे में कोई खराबी थी क्या ?''

''अरे नहीं, शादी होकर ज्यादा दिन नहीं हुए थे। सोचा कुछ दिन एन्जाय कर लें। पहले सास को हमारा फैसला बुरा लगा परन्तु उन्होंने कहा - देखो लड़का हो तो मत गिरवाना। यहाँ आए, जाँच करवाई। लड़का नहीं था तो ज्यादा नहीं सोचा।''

''आपको खराब नहीं लगा ?''

''अरे तुम किस जमाने में जी रही हो ? एक बार बच्चा हो गया तो जिन्दगी खत्म।''

मैंने छोटी को अपनी छाती से चिपका लिया। वह सुन्न थी। मुझसे ऐसे लिपट गई जैसे मैं उसे बचा ही लूँगी। मैंने खोखली आवाज में उसे आश्वासन दिया।

''मैं हूँ ना छोटी, तू चिन्ता क्यों करती है।''

छोटी सुबकते हुए बोली -

''मुझे बहुत डर लग रहा है दीदी, मुझे बचा लो दीदी। ये हमें क्यों मार रहे हैं दीदी ? हमने इनका क्या बिगाड़ा दीदी ?''

''शान्त हो जा छोटी। सब ठीक हो जाएगा। हिम्मत नहीं हारते। जब हम लाचार होते हैं, तब हमें ईश्वर से आने वाले तूफान का सामना करने की ताकत माँगनी चाहिये।''

मैं शान्त हो गई थी, क्योंकि मैं अपने मन को समझा चुकी थी कि अब कुछ नहीं हो सकता। रिजल्ट आने के बाद तनाव खत्म हो जाता है। फिर बचती है खुशी या अवसाद।

हमारी मानसिक स्थिति फाँसी की सजा मिले कैदी की तरह थी जिसे सुप्रीम कोर्ट फैसला सुना चुका था और राष्ट्रपति ने भी अपील नामंजूर कर दी थी।

ममता की कोख काल कोठरी बन गई थी।

तारीख तय हो रही थी।

सुना छोटी वह औरत क्या कह रही थी ? वह तो कुछ समय और एनजॉय करने के चक्कर में एबार्शन करा आई। जरा सोच छोटी क्या करेगी ऐसे दुनिया में पैदा होकर, जो इतने निष्ठुर हैं। वहाँ तो पैदा होने के बाद भी कदम-कदम पर तेरी बेईज्जती होती है। वो मैथिलीशरण गुप्त जी लिख गए हैं :

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

जिन्दगी भर तू अबला ही कहलाएगी और रोते ही रहेगी।

एक और संत कवि ने हमें ढोर, गवार, शूद्र और पशु के समकक्ष बैठा दिया है। उसकी उस कृति की ये लोग रोज सुबह पूजा करते हैं।

क्या करेगी छोटी इनकी दुनिया में पैदा होकर ??

''चलो चलकर खून का नमूना दे देते हैं।''

''जी''

टेक्नीशियन ने माँ के हाथ पर रबर का पट्टा बांध कर खून का नमूना ले लिया।

रिपोर्ट शाम को ले जाइये।

''तुम रिक्शा करके घर चली जाओ। पैसे हैं कि नहीं ?''

''घर पहुँचकर उसको दे दूँगी।''

''ठीक है।'' और पापा ऑफिस की तरफ चल दिये।

माँ ने ऑटो किया। आफिस के समय की वजह से ट्रॉफिक तेज हो गया था। घर पहुँचने तक हम काफी थक गए थे। इच्छा हुई माँ से कहें वहाँ से निकलने के पहले एक कप चाय या ठंडा पी लेती। हम लोगों को घर पहुँचने तक राहत रहती। माँ ने घर में घुसकर किसी से बात नहीं की। नानी वापिस लौट चुकी थी। दादी अपने कमरे में आराम कर रही थी।

माँ सीधे अपने कमरे में घुसीं और दरवाजा बंद कर लिया। फिर पलंग पर औंधे मुँह गिरकर तकिये में सिर छुपाकर सुबकने लगीं।

हम तीनों को रोते-रोते न जाने कब नींद लग गई।

दरवाजे की थाप से नींद खुली। दादी माँ को बुला रही थी।

''अरे बहू तुम कब आई पता ही नहीं चला। मुझे जगा दिया होता। तुमने खाना भी नहीं खाया। टेबल पर वैसा ही रखा है। खाये बिना काम कैसे चलेगा। और रो-रो कर तुमने अपना ये क्या हाल बना रखा है ? डॉक्टर साहब ने क्या बोला ? कब बुलाया है ?''

''जी आज शाम को रिपोर्ट देंगे। फिर जैसा जमेगा, समय देंगे।''

•••

सफाई...

''क्यों दीदी ?''

''बोल''

''वह आंटी कह रही थी, सफाई करवाने आई हैं।''

''क्या हमें वह गन्दगी कह रही है, जिसे वे साफ करेंगे ? ''

नहीं छोटी हम नहीं, इनका कृत्य गंदा था, इनकी सोच गंदी है।

''क्या इसे गहराई में इन्होंने सोचा दादी ? ''

''काश....''

•••

भय ...

''दीदी समय पास आ रहा है। आज शाम खून की रिपोर्ट।

अब ज्यादा से ज्यादा एक दो दिन और....''

''हूँ छोटी।''

''क्यों दीदी – बहुत दर्द होगा ?''

''नहीं छोटी यही सवाल माँ ने डाक्टर अंकल से भी पूछा था। उन्होंने कहा था कि बिल्कुल नहीं। आपको सुला देंगे बहन जी।''

''माँ तो सो जाएगी, पर हमारा क्या ?''

क्या उस दवाई से हमें भी नींद आ जाएगी दीदी ? ऐसी दवाई बनी है क्या जिसमें एबार्शन के समय, अंदर बच्चे को कोई तकलीफ न हो ? मैंने तो सुना है कि माँ को नींद की दवाई देने से हमारा अंदर दम घुटेगा। मुझे तो बहुत डर लग रहा है दीदी।

यह समझ में आ गया है कि हम बच तो पाएँगे नहीं। हमारी हालत जाल में फंसे उस पंछी की तरह हो गई है जो थककर फड़फड़ाना छोड़ देता है।

अब ईश्वर से यही मना रहे हैं कि मौत थोड़ी आसान मिले। तड़प तड़प

कर न मरना पड़े।

दीदी मेरे मन में तो एक बार यह विचार भी आया कि क्यों न हम एक दूसरे के गले मे ंइस नाल से फाँसी लगाकर खत्म हो जाएँ। पता नहीं ये लोग हमें कैसे मारेंगे।

''नहीं छोटी, वह आत्महत्या कहलाती है। आत्महत्या कायर करते हैं। हम कायर नहीं। इसी सिलसिले में एक ख्याल आया। हम बार-बार इसी देश में जन्म लेंगे। यह जो हो रहा है, उसे बदलने की कोशिश करेंगे। जन्म लेने में सफल न हो पाए तो समझेंगे, इस यज्ञ में अपने शरीर की आहुति दे दी।''

''रिपोर्ट नॉर्मल आई है।''

''डॉक्टर साहब ने परसों सुबह का टाईम दिया है।''

तो दीदी अब उल्टी गिनती शुरू कर दें ?

इतने अच्छे दादा-दादी को हम नहीं देख पाएँगे। नेहा तो हमें जान भी नहीं पाएगी कि उसकी जिन्दगी में कब दो छोटी बहनें आईं और चली गईं।

बाद में यदि माँ को लड़का होता है तो उसे कोई नहीं बताएगा कि तुम्हारी तीन बहनें थीं।

दादाजी भोले लगते हैं। आराम से बैठकर पेपर पढ़ते रहते हैं। सुनाई भी कम देता है तो घर में हो रही बहुत सी बातें न उन्हें समझ में आती हैं, न कोई बताता है। यह सारी खिचड़ी पापा और दादी में पकी है।

कब सुबह हुई और कब शाम हुई, समझ में नहीं आया।

''देखो दीदी, डूबते सूरज की लालिमा कितनी सुन्दर है। अब हम कभी इस लालिमा को दुबारा देख नहीं पाएँगे ना ?''

फिर शुरू हुई काली रात। माँ-पिताजी और हम दोनों में कोई नहीं सो पाया।

''छोटी, समय आ गया है इस प्यारे घर और परिवार को अलविदा कहने का।''

नेहा स्कूल जा रही होगी। उसे आखिरी बार बाय कहने की इच्छा हो रही है।

दादी से यह कहने की इच्छा हो रही है कि रोज दो-दो घंटा पूजा में बैठकर भी भगवान तुम्हें बुद्धि क्यों नहीं देता, कब उठोगे तुम लोग इन ढकोसलों से।

गुमसुम माँ, पापा के पीछे बाईक पर बैठ गईं.... तो यह माँ पापा के साथ बाईक का आखिरी राउंड। मुझे तो यह सब सच नहीं लग रहा है छोटी।

काश यह सच न होता दीदी।

•••

विदाई ...

रिसेप्शन पर पापा ने भर्ती करने की चिट्ठी दिखाई। उनसे पता, टेलीफोन नम्बर वगैरह पूछा गया और एक दूसरा कागज दिया गया।

''आपके लिये कमरा नम्बर दो सौ चार बुक है।''

''कहाँ से जाना है ?''

''बाँयी तरफ आपको लिफ्ट मिलेगी। उसे दूसरी मंजिल पर उतारने को कहिये।''

''जी''

हम लोग लिफ्ट में पहली बार चढ़े थे। लिफ्ट ऊपर चलने लगी तो पेट में गुदगुदी हुई। दूसरी मंजिल पर लिफ्ट एक झटके से रुकी। कॉरीडोर में एक सिस्टर ने कमरा दिखाया। इस समय अस्पताल में स्टाफ के ड्यूटी बदलने का टाईम, मरीजों के लिये नाश्ते की ट्राली व मरीजों को जाँच व ऑपरेशन के लिये ले जाने वाली ट्रॉलियों की वजह से काफी ज्यादा आवाजें आ रही थीं।

सिस्टर ने हम लोगों के लिये कमरा खोला और माँ के लिये बिस्तर ठीक करने लगी।

उसने कहा – ''उधर बाथरूम है। आप आराम से लेट जाइए। कोई जरूरत

हो तो यह बिस्तर के बाजू में घंटी है। बजा दीजियेगा।''

पापा पीछे खड़े थे। उसने पलटकर उनसे कहा – ''आप मेरे साथ काऊंटर पर आ जाइए। आपको दवाइयों की पर्ची देना है। और हाँ, आपसे कन्सेन्ट भी लेना है।''

पापा ने माँ से कहा – ''तुम थोड़ा आराम करो। मैं यह दवाइयाँ लेकर अभी आता हूँ।'' वह जाते-जाते अपने पीछे दरवाजा बंद कर गए।

सामने खिड़की थी। माँ परदा हटा कर वहाँ खड़ी हो गई। कमरा दूसरे मंजिल पर था। नीचे अस्पताल के पिछवाड़े का लॉन था। उसके बाद व्यस्त सड़क थी। ऑफिस जाने वाले ट्रॅफिक की आवाजें आ रही थीं। सड़क के उस पार बड़ी-बड़ी बिल्डिंग और शॉपिंग मॉल दिख रहे थे। इन पन्द्रह-बीस वर्षों में काफी प्रगति हुई थी।

''क्यों दीदी ?''

''क्या छोटी ?''

''क्या ये बहुमंजिला इमारतें, मंहगी उन्नत गाड़ियाँ, ढेर सारे ऑफिस और बढ़ता ट्रॅफिक, प्रगति के द्योतक हैं ?''

''यदि ऐसा है तो पश्चिम पूर्व की तरफ क्यों आकृष्ट हो रहा है ? उनके पास तो यह सब हमसे कई गुना ज्यादा है। फिर वे सुखी क्यों नहीं ?''

''छोटी यह तो भौतिकता है। उनके समझ मे आ चुका है कि भौतिकता से क्षणिक सुख मिलता है। चिरस्थाई सुखी रहने के लिये वे हमारे प्रगल्भ संस्कृति व नैतिक मूल्यों की तरफ आकर्षित हो रहे हैं।''

''और हम यह जानकर भी भौतिकता की तरफ दौड़ रहे हैं।''

माँ चुपचाप खिड़की में खड़ी थी। आँसु सूख चुके थे। उसने अपने आपको पूर्णतया परिस्थिति के हवाले कर दिया था। उतने में माँ के मोबाईल की घंटी बजी।

''दीदी, नानी का फोन आया है।''

''तुझे कैसे पता लगा ?''

''रिंग टोन से।''

''क्यों गुड़िया ? कैसी हो ?''

माँ चुपचाप खड़ी रह गई। उसकी हिचकियाँ हमें हिला रही थीं। वह रुलाई दबाने की पूरी कोशिश कर रही थी।

''हैलो, हैलो, तुम चुप क्यों हो ?''

उसका सुबकना शायद नानी को सुनाई दे गया।

''बेटा नहीं, ऐसे नहीं, बिल्कुल शान्त हो जाओ। हिम्मत मत हारो।''

माँ ने सोचा, अब छिपाने से कोई मतलब नहीं। उसने रोते-रोते कहा - ''कैसे शान्त हो जाऊँ माँ। मेरी कोख में एक नहीं दो-दो जीव पल रहे हैं माँ। मैं तो माँ शब्द को कलंकित कर रही हूँ। क्या कभी माँ-बाप हत्यारे हो सकते हैं। क्या कभी कोई माली खुद अधखिली कली को मसल सकता है ?''

''लेकिन बेटी हम समाज की रूढ़ियों के आगे मजबूर हैं। हिम्मत रखो। ''

''माँ तुम खुद एक नारी हो। तुम तो मेरी पीड़ा को समझो। और जहाँ तक हिम्मत वाली बात है, समाज को यह गलतफहमी है कि नारी कमजोर है। उद्देश्य के बिना ताकत कैसे आ सकती है ? छत्रपति शिवाजी के रायगढ़ किले पर, नीचे के गांव से, एक स्त्री दूध बाँटने आती थी। एक शाम उसे किले से बाहर लौटने में देर हो गई तब तक किले का मुख्य द्वार बंद हो चुका था। पहरेदारों ने उसे बाहर जाने से मना कर दिया। उसकी जान, गांव में उसके नन्हे बच्चे में अटकी थी। उसे किसी भी हालत में नीचे उतरना था। उसने किले के पीछे से रास्ता खोजा और अंधेरे के बावजूद, उतर गई। वह एक सीधी खड़ी चट्टान थी, जिससे वह उतरी। दूसरे दिन महाराज को भी आश्चर्य हुआ। आज भी वह चट्टान, हिरकरणी के बुर्ज के नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ उद्देश्य था। पन्ना धाय ने कुंवर की जगह अपने बच्चे को लिटा कर उसकी आहुति दे दी, क्यों कि राज्य का वंश दीपक बचाना था। वक्त आने पर नारी तो चंडी है। उसे कोई कमजोर न समझे, परन्तु यहाँ तो माँ हम अपने बच्चों को निरुद्देश्य मार रहे हैं। इस पाप को छाती पर लेकर हम कहाँ जाएँगे माँ ? आज वे जरा सी हैं माँ। परन्तु क्या पता मैं किस सम्भावना को नष्ट कर रही हूँ। क्या पता यह कोपल महान वट वृक्ष बनेगा ? क्या पता यह कुछ बूँदों का उद्‌गम किसी नदी का विस्तीर्ण पात्र बनने वाला हो ? क्या पता मैं किस अलौकिक व्यक्तित्व को आने से पहले नष्ट कर रही हूँ। मुझसे यह सहा नहीं जा रहा है माँ।''

''बेटी तुम दामाद जी को समझाने की कोशिश क्यों नहीं करती ?''

''बहुत कोशिश की माँ। पिताजी गऊ हैं। ये भी उतने बुरे नहीं, परन्तु आग लगोन वाली इनकी माँ है। वह पोते की रट लगाए बैठी है। मुझे दिन-रात ताने देती रहती है। कहती है, तू मुझे एक पोता नहीं दे सकती तो किस काम की। तेरे बाप से हमने दहेज के लिये भी कोई जिद नहीं की। यदि एक पोते की इच्छा है तो क्या गलत है ? मैं कहती हूँ क्या फर्क पड़ता है तो बोलती है तेरा भाई न होता

तो तुम्हारे माँ से मैं पूछती कि फर्क पड़ता है कि नहीं। फर्क पड़ता है, बिल्कुल पड़ता है। मैं तो तब तक ना मरूँ, जब तक एक पोता न देख लूँ। हम तो फंस गए तुम्हें ला कर।''

माँ ने रोते-रोते कहा - ''अब इसमें मेरी क्या गलती माँ। मैं ऐसा क्या करती जिससे लड़का होता ? इससे अच्छा तो मैं बाँझ रह जाती। कम से कम यह ताने तो नहीं सुनने पड़ते।''

''फिर अलग तरह के ताने सुनती बिटिया।''

''कम से कम हत्यारन तो न बनती। कौन से लोक में पहुँचूँगी माँ इन मासूमों की लाशों पर सवार होकर ?''

''क्यों दीदी।''

''बोल। अंत तक पीछा नहीं छोड़ेगी।''

''एक औरत है जो लड़के के पीछे लगकर उसकी शादी करती है। उसके लिये अपने मन की लड़की खोजकर लाती है। वह चाहती है कि उसकी उम्र हो रही है, ऐसी बच्ची घर लाए जो उसी की तरह उसके लड़के की देखभाल करे। वह उसमें सफल भी होती है। तब इसे लगता है कि बहू ने लड़के को उससे छीन लिया। एक औरत ही है जो लड़के को उसकी पत्नी के विरुद्ध आग लगाती है। अपनी ही लाई बहू पर मिट्टी तेल डालकर उसको आग लगाती है। घर की चाबियाँ देती है पर हक नहीं देती। दहेज के लिये अड़ती है। वह यह भी उम्मीद करती है कि उसके बेटी के साथ ससुराल में यह सब न हो।''

स्त्री रोग चिकित्सक भी एक औरत है, जो सोनोग्राफी करवाने स्त्री को

भेजती है। सोनोग्राफी के बाद काम को अंजाम देने में भी सेनापति और उसकी फौज में अधिकतर औरते ही हैं। पेड़ काटने वाली कुल्हाड़ी का हत्था तो लकड़ी का ही है।

''दीदी हम क्यों कहते हैं कि पुरुष हमें प्रताड़ित कर रहे हैं ?''

•••

पापा सिस्टर के साथ कमरे के बाहर चले गए। दरवाजा बंद हुआ। अस्पताल की आवाजें सुनाई देना बंद हो गईं। कमरा शान्त था। माँ बिस्तर पर बैठ गई। माँ के साथ कुछ ये आखिरी पल। इस मजबूर औरत को क्या दोष दूँ। इसने तो हमें फूल की तरह सहेजा। अपने खून से हमें सींचा। हमारे लिये जाने कितनी सूनी रातों में आँसू बहाए। दु:ख सिर्फ यह हो रहा है कि यह कब अपने आप को पहचान पाएगी ? कितनी पीढ़ियों तक और यह कुंठित जीवन जीने के लिये जन्म लेगी ? इसका अंत कब होगा ?

•••

दीदी ये कन्सेन्ट क्या होता है ?

''अरे छोटी अब तुम्हारे ऊपर हँसू या रोऊँ। तू आखिरी समय तक सवाल पूछना नहीं छोड़ेगी।''

''बताओ तो।''

''अरे कन्सेन्ट मतलब अनुमति''

''किस चीज की ?''

''पापा उसमें अंग्रेजी में यह लिखने वाले हैं कि मैं अपने बच्चों की हत्या करवाने हेतु तैयार हूँ। उससे सम्भावित खतरों को मुझे बताया गया, जिसे मैं स्वीकार करता हूँ।

छोटी यह एक ऐसी हत्या है जिसे सरकार ने अनुमति दी हुई है। इसमें पुलिस केस नहीं बनता। इन्सान ने खुद की अदालत बना ली है, जिसमें उसने सारे नीति-नियम खुद की सुविधानुसार बना लिये हैं।

वह ऊपर वाले की अदालत को तवज्जो नहीं देता।''

•••

पिताजी के हाथ में डॉक्टरों ने दवाई की पर्ची दी।

हर मौके पर आपके हाथ में अलग तरह की पर्ची मिलती है। बच्चे को स्कूल में भर्ती करवाएँ तो स्कूल से किताबों व स्टेशनरी की पर्ची, पूजा-पाठ सत्यनारायण में पंडित जी की दी पर्ची, शादी के समय टेन्ट वाले की पर्ची, और अंतिम संस्कार के समय भी एक अलग तरह की पर्ची जिसमें बाँस, भूसा, हांडी, कंडे आदि लिखे रहते हैं।

क्यों दीदी, ऐसा लगता है ना कि यह दवाई की पर्ची मानो अपने अंतिम संस्कार की पर्ची है।

हाँडी की जगह ग्लूकोज की बोतल, भूसा की जगह रुई, शुद्ध घी, शहद की जगह मलहम, मंहगे इंजेक्शन, रस्सी की जगह बैंडेज और कफन की जगह गॉज।

देखो गॉज का थान और कफन एक ही तरह के झीने सफेद कपड़े से बनता है।

क्यों दीदी, कफन से ख्याल आया, वह रूखा सा सफेद कफन बुजुर्गों को लपेटने के लिये तो ठीक है, पर हमें मजा नहीं आएगा। क्या ये लोग बच्चियों के लिये उनके साईज का सुंदर गुलाबी कपड़े का कफन नहीं कटवा सकते ?? विदाई थोड़ी रंगीन लगेगी।

•••

सिस्टर ने पापा के हाथ से दवाईयों का पैकेट लिया और उसमें से एक ग्लूकोज की बोतल, आई.व्ही. सेट और इन्ट्रॅकॅथ निकाला। बोतल को स्टैंड पर लटका कर थोड़ा ग्लूकोज बहा कर सेट की हवा निकाली। उसने पापा से कहा - ''आप एक तरफ बैठ जाइए, कई बार रिश्तेदार मरीज का खून देखना सह नहीं पाते।''

•••

हमें लगा, हालाँकि जो अपने बच्चों की हत्या करने निकले हैं वे इतने कमजोर दिल के तो नहीं होंगे।

•••

सिस्टर ने माँ के हाथ में बाँह पर एक रबर का पट्टा बाँध दिया और कहा - ''जरा मुट्ठी बांध लीजिये।''

''ऐसे नहीं, अंगूठा अंदर करके।'' उसने माँ की फूली हुई खून की नस में इन्ट्रॅकॅथ की सुई लगा दी। हमेशा की तरह चिपकाने की पट्टी खोजने लगी, जो दवाई के पैकेट में नहीं मिली। पापा और केमिस्ट को भला-बुरा कहा कि पूरा सामान नहीं लाते और आई.व्ही. स्टैंड में लटकी हुई एक पुरानी चिपकनी का

टुकड़ा खींचकर माँ के हाथ में चिपका दिया। एक मिनट में चालीस से पचास बूँदों के हिसाब से ग्लूकोज की बोतल शुरू कर दी।

हम दो दिनों से भूखे-प्यासे थे। तुरंत ताजगी महसूस होने लगी।

''बेहोशी वाले डॉक्टर साहब आ गए हैं। मरीज को ओ. टी. में शिफ्ट करो।''

मानो यह कहा जा रहा हो कि मजिस्ट्रेट साहब आ गए हैं - कैदी को तख्ते पर भेजो।

माँ को ट्रॉली पर ले लिया था। पापा ने माँ का हाथ हल्के से दबाया। माँ की आँखों के किनारे से दो गर्म आँसू की बूँदें टपकीं।

हमारा दिल पापा से अलग होते समय कसमसाया।

सुबह के आठ-साढ़े आठ बजे होंगे। विविध भारती पर एक ही कलाकार का कार्यक्रम चल रहा था। कुंदनलाल सहगल पूरा दर्द उड़ेल रहे थे - ''नैहर छूटत जाय।''

•••

''दीदी''

''क्या ?''

''याद है, तुमने मुझे चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की एक कहानी सुनायी थी - ''उसने कहा था।'' लहना सिंह की सब पुरानी यादें ऊपर आती हैं। तेरी कुड़माई हो गई ? धत्त् कहकर लड़की शरमा कर भाग जाती है। हमारी जिन्दगी तो

बहुत छोटी सी है पर खूब याद आ रहा है नानी का आना, गोद भराई की रस्म, बुआ की शादी, उसकी सहेलियों से उनके साथ की छेड़खानी, ढोलक मजीरे की थाप पर जमकर हुआ नाच, विदाई के समय पापा जैसे कठोर दिल का भी सुबकना....। क्यों दीदी, हमारा क्या होगा ? ये लोग हमें निकाल कर फेंक देंगे ना ? एक दाई आएगी, हमें एक पुराने कपड़े में लपेट दिया जाएगा। यदि मैं इनसे बता सकूँ तो कहूँगी - मुझे और मेरी दीदी को एक साथ लपेट देना और हो सके तो धरती माता की गोद में थोड़ा गहरे गाड़ देना। हाँ, दोनों को एक साथ लपेटकर...। दीदी मैंने तो सुना है, यदि अस्पताल की इन दाइयों को ठीक से पैसे न दिये गए तो ऐसे ही फेंक देती हैं, कुत्ते-जानवरों को खाने के लिये।

सोचकर कैसा वीभत्स लगता है, पर ऐसा हो रहा है। याद है इसी के लिये तो वो डॉक्टर अंकल कह रहे थे कि पूरा टीम वर्क है। हम अकेले थोड़े ही पैसे रख रहे हैं। जो होगा उसका बाद में इंतजाम भी तो करना है।

लगता है इनसे चीखकर कहो कि इज्जत की जिन्दगी तो दे नहीं सके, कम से कम इज्जत की मौत ही दे दो।

मैं एक बार सिर्फ एक बार पापा की गोद में जाना चाहती हूँ दीदी।

क्या ऐसा नहीं हो सकता कि पापा हमें खुद हाथ में लेकर हमारी उचित व्यवस्था करें। उस अवस्था में भी मैं पापा के हाथों में सुरक्षित महसूस करूँगी दीदी। उन मजबूत हाथों में शमसान तक जाना अच्छा लगेगा दीदी। कह सकती तो कहती, एक बार मेरे माथे को चूम कर, हल्के से उस गड्ढे में रखना। रखते समय दीदी की तरफ मेरी पीठ मत करना। प्यार से मिट्टी सरका कर, कर देना हमें सुपुर्दे खाक। आँखें थोड़ी सी नम कर लेना और घर पहुँच कर किसी कोने

में चुपचाप हमारे नाम के दो दिये जला देना।

उठो तो पीछे पलटकर मत देखना। पीछे पलटे तो आगे जी नहीं पाओगे। सम्राट अशोक ने कलिंग के महायुद्ध व नर संहार के बाद पीछे पलट कर देखने की गलती की थी। इतिहास साक्षी है, उसके बाद वह आगे सम्राटों की तरह जी नहीं पाया।

हमारे साथ जो हो रहा है, वह हमारी नियति थी।

आप तो साधन मात्र थे, परन्तु यह आप अपने आप को नहीं समझा पाओगे।

ऑपरेशन थियेटर के दरवाजे पर अंदर एक दूसरी ट्रॉली खड़ी थी, जिस पर माँ को सरका दिया गया। इस प्रकार से सफर की अंतिम गाड़ी पर चढ़े। हमारे पीछे दुनिया का दरवाजा बंद हुआ। ऑपरेशन ट्रॉली को ऑपरेशन टेबल की ऊँचाई तक उठाया गया और माँ को धीरे से ऑपरेशन टेबल पर सरकने के लिये कहा गया। अंदर पूरी अलग ही दुनिया थी। एक तरफ से ऑटोक्लेव्ह की सीटियों की आवाजें आ रही थीं। पता नहीं कितनी हत्याओं के लिये सामान पक रहा था। समाज के लिये ये लोग कम से कम एक अच्छा काम कर रहे हैं कि अच्छी साफ-सफाई की वजह से माँ की जिन्दगी सुरक्षित हो जाती है।

माँ के सिरहाने बेहोशी वाले डॉक्टर साहब अपनी मशीन चेक कर रहे थे और गले में डाली जाने वाली नलियों को कोई मलहम लगा रहे थे। उन्होंने माँ की फाईल उठाई और जाँच की रिपोर्ट पलटाने लगे। उन्होंने सिस्टर से माँ को छाती पर ई.सी.जी. इलेक्ट्रोड लगाने के लिये कहा। मॉनीटर का बटन दबाते ही माँ के हृदय के स्पंदन की मधुर आवाज आने लगी। इस धड़कन को तो हम लाखों में

पहचान सकते हैं। हमने उसके उतार-चढ़ाव को भी खूब सुना है। हमने बहुत करीब से महसूस किया है जब-जब माँ का दिल बैठा है, या आराम से चल रहा है या कभी-कभी खुशी से बल्लियों उछला है।

एक तरफ नल की आवाज आ रही थी। शायद ऑपरेशन की टीम हाथ धो रही थी। हमारे बायीं तरफ सिस्टर ट्रॉली लगा रही थी। उन आपस में टकरानेवाले स्टील के हथियारों की आवाज से हमें बहुत डर लग रहा था। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हमें और माँ को वार्ड में ही सुलाकर ऑपरेशन थियेटर में लाया जाये। लेकिन कहते हैं नींद में मौत किस्मत वालों को ही मिलती है। हमारी वह किस्मत न थी।

हम दोनों सुन्न थीं। छोटी मुझसे बुरी तरह लिपट गई थी। मैं उसे खोखला आश्वासन दे रही थी कि ''मैं हूँ ना!''

''जो भी हथियार हमें मारने अंदर आएगा उसके सामने पहले मैं जाऊँगी। मेरे मरने के बाद ही कोई तुम्हें छू पाएगा छोटी।''

वह बुरी तरह से काँप रही थी और कुछ भी सुनने की स्थिति में नहीं थी। मैंने उसे अपने अंक में पूरी ताकत से समेट लिया और कहा ''चलो छोटी अब उस परम पिता परमेश्वर का नाम लें।''

हे परम पिता

तुमने यहाँ भेजा जरूर

परन्तु हमें स्वीकारा नहीं जा रहा।

हम तो कहीं के न रहे।

हे दयालु,

बचा लो हमारी आत्मा को भटकने से।

दे दो थोड़ी सी जगह,

अपने श्री चरणों में।

हमें दुःख है,

हम तुम्हारे सुंदर साम्राज्य को,

देख नहीं पाए,

उपभोग नहीं कर पाए,

हमने सुनी तो कोयल की मीठी कूक,

परंतु न देख पाए आमों का बौर।

सुना तो मेघों का गर्जन,

किन्तु न देख सके विद्दुल्लता को।

सुना भँवरे के गुंजन को
किन्तु न देखा खिलता गुलाब।

मंदिर की घंटियाँ तो सुनीं,

किन्तु तरस गए तुम्हारे दीदार को।

हे प्रभु,

तुमने माँ की कोख तो दी,

पर आँचल छीन लिया।

तुमने जिन्दगी तो दी,

पर मकसद नहीं दिया।

हम नन्हें,

तुम पर आक्रोश का भी सामर्थ्य नहीं।

परन्तु,

यह कैसा खेल ?

हे कुम्हार,

तुमने हमें गढ़ा।

क्या असंतुष्ट थे अपनी कृति से ?

हम हैं कच्ची मिट्टी।

मत समेटो इतनी जल्दी हमें।

झोंको हमें संसार की अग्नि में।

दो हमें एक मौका, निखरने का।

चमकेंगे हम भी कुंदन की तरह।

हे, जीवनदाता,

हमें मृत्यु से भय नहीं।

पीड़ा है, इस, अर्थहीन गमन की।

प्रस्तुत हैं हम, वीरगति के लिये।

स्वीकार है हमें पुरुषों की प्रताड़ना,

स्वीकार है हमें अग्नि परीक्षा,

क्योंकि,

हर जलती बहू,

क्रान्ति की एक मशाल है।

जितनी आहुतियाँ,

उतना तीव्र आक्रोश,

जितनी चीखें,

उतनी जल्दी इन्कलाब,

बहेंगे जितने अश्क,

होगा उतनी जल्दी महाप्रलय,

मंजूर है हमें वह शहादत,

न दो हमें ऐसी आसान मौत,

न .. दो ... हमें .....

दवाई का असर शुरू हो गया था। सारे दुख, दर्द, तनाव समाप्त हो रहे थे। सब कुछ शान्त होता जा रहा था।

हमें चिरनिद्रा घेरती जा रही थी.....।

•••

अंत ...

कहानी का अंत आपके हाथ में है। डॉक्टरों को दोष देना और नियम बनाने से समस्या नहीं सुलझेगी। समस्या जन जागरण से ही हल होगी।

हमें अपनी संस्कृति में लौटना होगा।

पढ़ी-लिखी व नौकरी पेशा लड़कियों के लिये सामान्यत: दहेज की माँग नहीं होती। अत: स्त्री शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये। एक और स्वस्थ परम्परा शुरू हो चुकी है - पढ़े-लिखे दम्पति अपने आपको एक या ज्यादा से ज्यादा दो बच्चों में सीमित कर रहे हैं। उसमें वे इस बात को महत्व नहीं दे रहे हैं कि लड़का है या लड़की। सरकार की तरफ से भी बच्चियों की शिक्षा के लिये आकर्षक योजनाएँ शुरू हो चुकी हैं।

हो सकता है यह कृति आपको अतिरेक लगे। भावावेश में बेबाक लिखता चला गया। आलोचना के लिये प्रस्तुत हूँ।

मैं कोई व्यावसायिक लेखक नहीं। इस कृति की सबसे बड़ी सफलता यही होगी कि इतनी चेतना जागृत हो कि यह कुप्रथा बंद ही हो जाये। जब कन्या भ्रूण हत्या बंद हो जाएगी तब किसी को यह किताब खरीदने की इच्छा ही नहीं होगी। आज कोई सती प्रथा बंद करने के संदर्भ में किताब लिखे तो उसे कोई नहीं पढ़ेगा, क्योंकि वह समस्या सुलझ चुकी।

ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि यह आन्दोलन अनावश्यक हो जाये और कन्या भ्रूण हत्या इतिहास में जमा हो जाये।

•••